आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 22 | उदयपुर शुक्रवार 01 दिसम्बर 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

दुनिया दो रंगी

- आचार्य महाप्रज्ञ -

कई बार संक्षेप में लिखने का आग्रह करते-करते आखिर एक इतिहासकार ने अपने हाथ में एक छोटा सा कागज लिया। उस पर लिखा- 'आदमी इस दुनिया में आता है। कुछ दिन इस रंगमंच पर अभिनय करता है और एक दिन चला जाता है। यही मानव-जाति का इतिहास है।' राजा ने उस चिट पर लिखा 'आदमी का इतिहास' पढ़ा और उसे श्रेष्ठ इतिहास लेखक का पुरस्कार दिया।

अगर पूरी दुनिया को दो भागों में विभक्त करें तो एक ओर होगी सच्चाई और दूसरी ओर होगी भ्रांति। सच्चाई यह है कि आदमी कहां से आया, इसका पता नहीं और कहां जाना है, मात्र उसी के बारे में आदमी कुछ जानता है।

जब अतीत और भविष्य का पता नहीं होता तो आदमी भ्रांति का जीवन जीता है। इस भ्रांति को तोड़ना बहुत मुश्किल है। धर्म का काम था, आदमी को सच्चाई की ओर ले जाना और उसे भ्रांति मुक्त करना, किन्तु इसे विडम्बना ही कहा जाए कि धर्म के लोग भी भ्रांतियों की गिरफ्त में आ गए। आज धर्म के लोग ज्यादा भ्रांत हैं। उनमें ज्यादा कन्फ्यूजन है। कैसे टूटे धार्मिक कहे जाने वाले लोगों की भ्रांति?

आदमी यह मानकर चले कि सबकी एक निश्चित अवधि है। आदमी इस धरती पर आता है। कुछ दिन यहां रहता है और फिर एक दिन अपना प्रवास खत्म कर चला जाता है। यही सृष्टि का क्रम है। यही मानव जाति का इतिहास है।

एक राजा के मन में विश्व का इतिहास तैयार करवाने की इच्छा जागृत हुई। अपने मंत्री के सामने उसने अपनी इच्छा प्रकट की। मंत्री ने देश के प्रमुख इतिहासवेत्ताओं को बुलाया और राजा की इच्छा से उन्हें अवगत कराते हुए मानव जाति का इतिहास लिखने को कहा। राज्य की ओर से इसके लिए उचित पारिश्रमिक की भी घोषणा की। प्रमुख लेखकों ने इसके लिए एक वर्ष का समय मांगा। राजा ने इसकी अनुमति दे दी।

एक वर्ष बाद इतिहास लेखक अपने विशाल ग्रंथ के साथ दरबार में उपस्थित हुए। राजा ने उनके विशाल ग्रंथ को अमान्य करते हुए कहा- 'मुझे इतने बड़े ग्रंथ को पढ़ने का समय नहीं है।' लेखक अपने ग्रंथ को संक्षिप्त कर कुछ दिनों बाद फिर राजा के समक्ष प्रस्तुत हुए किन्तु राजा ने उन्हें भी अस्वीकार करते हुए कहा- 'मुझे बहुत संक्षिप्त इतिहास चाहिये।' कई बार संक्षेप में लिखने का आग्रह करते-करते आखिर एक इतिहासकार ने अपने हाथ में एक छोटा सा कागज लिया। उस पर लिखा- 'आदमी

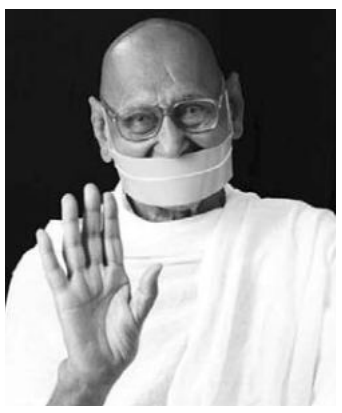

इस दुनिया में आता है। कुछ दिन इस रंगमंच पर अभिनय करता है और एक दिन चला जाता है। यही मानव-जाति का इतिहास है।' राजा ने उस चिट पर लिखा 'आदमी का इतिहास' पढ़ा और उसे श्रेष्ठ इतिहास लेखक का पुरस्कार दिया।

पहले अच्छे आदमी बनें। फिर कुछ और बनने का लक्ष्य बनाएं। यह सही निर्णय होगा। फिर भ्रांति नहीं होगी। आज की जो स्थिति है, वह इस बात की ओर संकेत करती है कि आदमी ने मूल्यों का अवमूल्यन किया है।

सूचना माध्यमों से आप प्रतिदिन दुनिया में हो रहे करप्शन और घोटालों को देखते-सुनते होंगे। आदमी के कारनामों को सुनकर ही आश्चर्य होता है। सारी बुद्धि आदमी की पैसा कमाने और नाम उजागर करने में खर्च हो रही है। वह ऐसी-ऐसी युक्ति निकाल लेता है कि सारे नियम-कानून धरे के धरे रह जाते हैं। आदमी का सारा चिन्तन, सारी बुद्धि और अक्ल अर्थ के इर्द-गिर्द चक्कर काट रही है। इससे आगे वह कुछ और सोचता ही नहीं है। आज की सारी समस्याओं का यही मुख्य कारण है। अर्थ केन्द्रित सोच ने आदमी को आदमीयत से बहुत दूर कर दिया है।

जीवन के उत्तरार्द्ध में आदमी धर्म का अभ्यास करता है। सोचता है, अभी तो कमाने-खाने के दिन हैं। बाल-बच्चे जब व्यापार-धंधा संभाल लेंगे तो तीर्थयात्रा भी कर लूंगा और भजन-पूजन में समय लगाऊंगा लकिन उम्र के साथ-साथ एषणा और लिप्सा इतनी बढ़ती जाती है कि जीवन क उत्तरार्द्ध में वह अपने चरण में पहुंच जाती है। उस समय धन की हाय-हाय और ज्यादा बढ़ जाती है। जवानी में तो शायद धर्म में मन भी लगता, बुढ़ापे में न जप करने में मन लगता है, न माला फेरने में।

पहले बेटे-बेटियों की ही चिन्ता थी अब उनके साथ पोते-पोतियों की भी चिन्ता सिर पर सवार हो जाती है। परिवार बढ़ने के साथ-साथ उतनी चिन्ताएं भी बढ़ने लगती हैं। पूछ-परख कम हो जाने से एक तरह की कूंठा भी मन में आने लगती है।

अनावश्यक दखल देने से कभी-कभी बेटे-बहू की झिड़कियां भी सुनने को मिलती हैं। जीवन बहुत दुखमय हो जाता है। जहां आदमी का मूल्य कम और पैसे का मूल्य ज्यादा हो जाता है, उस समाज में अनैतिकता और भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है।

उदयपुर में खंडपीठ के लिए अब आर-पार की लड़ाई

निरंतर हड़ताल, धरने और आंदोलन के बाद भी समस्या जस की तस, जनवरी में उग्रतर आंदोलन

मेवाड़ वागड़ हाईकोर्ट बैंच संघर्ष समिति के संयोजक शांतिलाल चपलोत ने बताया कि रियासतकाल में मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंहजी द्वारा जारी किये गये संविधान में उच्च न्यायालय का अधिकार प्राप्त था। उसके अनुच्छेद 13 में स्पष्टत: यह उल्लेख है कि 'राज्य मेवाड़ की रेरुयत को बाजाप्ता एक सा इंसाफ मिले और उनके जान और माल की बखूबी रहकर किसी की हकतरीफी न हो।' इस अनुच्छेद की क्रियान्विति के लिए 'महेन्द्राज सभा' नामक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई थी। तदुपरान्त महाराणा भोपालसिंहजी ने 1938 में महेन्द्राज सभा को समाप्त कर 'चीफ कोर्ट' एवं महाराणा की 'हिज हाईनेसेज कोर्ट ऑफ अपील' की स्थापना की।

सन् 1940 में उन्होंने चीफ कोर्ट और हिज हाईनेसेज कोर्ट ऑफ अपील को समाप्त कर शाही फरमान द्वारा उच्च न्यायालय एवं फाईनल कोर्ट ऑफ अपील की स्थापना की जो 23 मार्च 1948 तक कार्यरत रही। जब संयुक्त राजस्थान अस्तित्व में आया तब महाराणा भोपालसिंहजी ने संविधान विशेषज्ञ के. एम. मुंशी की राय से 23 मई 1947 को मेवाड़ राज्य के लिए नया संविधान जारी किया। उस समय मेवाड़ उच्च न्यायालय को रिट एवं व्यादेश प्रसारित करने के अधिकार दिये कारण कि मेवाड़ का संविधान विधिक सम्यक प्रक्रिया पर आधारित था। यह देश का पहला देशी राज्य था जिसके नागरिकों को रिट प्राप्त करने का अधिकार था।

1 मई 1948 को संयुक्त राजस्थान अस्तित्व में आया तब संयुक्त राजस्थान के उच्च न्यायालय की स्थापना यूनाईटेड स्टेट ऑफ राजस्थान हाईकोर्ट ओर्डिनेंस 1948 की धारा 13 द्वारा मुख्य पीठ उदयपुर में रखी गई। उसके बाद 7 अप्रेल 1949 को वृहत्तर राजस्थान का निर्माण हुआ तब राजस्थान हाईकोर्ट ओर्डिनेंस सन् 1949 को प्रख्यापित होकर ओर्डिनेंस नम्बर 3 सन् 48 दिनांक 29 अगस्त 1949 द्वारा उच्च न्यायालय की मुख्य पीठ जोधपुर स्थापित की गई और खंडपीठ जयपुर के साथ उदयपुर में रखी गई।

उदयपुर खंडपीठ 22 मई 1950 से एवं जयपुर खंडपीठ 14 जुलाई 1958 से समाप्त कर दी गई लेकिन 31 जनवरी 1977 से जयपुर में स्थाई खंडपीठ पुन: प्रारंभ हो गई। इस क्षेत्र की जनता कोई नवीन खंडपीठ की मांग नहीं कर रही है अपितु 22 मई 1950 को जो खंडपीठ यहां से समाप्त कर दी थी, उसकी पुन: स्थापना की मांग कर रही है। जब जयपुर संभाग के नागरिकों को उनकी स्थायी खंडपीठ पुन: मिल गई तो दक्षिणी राजस्थान के नागरिकों को भी पुन: स्थायी खंडपीठ दिया जाना अति आवश्यक है।

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एडवोकेट चपलोत ने बताया कि उदयपुर में हाईकोर्ट की मांग सर्वप्रकारेण जायज है। पिछली जनगणना के अनुसार उदयपुर डिवीजन की जनसंख्या 1, 32, 73, 199 है। इसमें उदयपुर के अलावा डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़, राजसमंद, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़ तथा सिरोही जिले सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र सबसे पिछड़ा है। यहां के आदिवासी गरीबी रेखा से नीचे हैं। अधिकांश मुकदमें उन्हीं लोगों के हैं और जेल में भी वे ही लोग हैं। इस आंदोलन के तहत पिछले 35 वर्षों से कई बार धरने दिये गये। हर माह की सात तारीख को वकीलों की हड़ताल रहती है। इस समय सभी वकीलों की उपस्थिति रहती है। ऐसा दृश्य होता है जैसे दुकानें तो खुली हैं पर किसी द्वारा सामान नहीं बेचा जाता है।

चपलोत ने बताया कि विचित्र स्थिति तो यह है कि प्रधानमंत्री, राज्य के राज्यपाल, मुख्यमंत्री आदि जिन-जिन से भी प्रतिनिधि मंडल ने भेंट की, सबने हमारी मांग को उचित आवश्यक एवं जायज मानी पर परिणाम कुछ नहीं निकला।

चपलोत ने बताया कि अब हमारे धैर्य का बांध टूटने लगा है। संघर्ष समिति ने 9 दिसंबर को इधर के सभी सांसद, विधायक, प्रधान, उपप्रधान की बैठक रखी है। यदि समस्या का हल नहीं निकला तो जनवरी में आरपार की लड़ाई होगी। सभी क्षेत्रों के 30-40 हजार लोगों की उपस्थित में उग्र से उग्रतर आंदोलन किया जाएगा।

स्मृतियों के शिखर (41) : डॉ. महेन्द्र भानावत

नड़ और नाड़ी की सुरतां एक करनेवाला कलाकार करणा

भारतीय लोककला मंडल द्वारा उदयपुर में आयोजित लोकानुरंजन मेले में सर्वाधिक चर्चित कलाकार देशभक्त करणा रहा। शहर की मुख्य-प्रमुख सड़कों से जब गाते, बजाते, नाचते कलाकारों का भव्य शोभा जुलूस निकला तो शहर के सारे लोगों की नजर हाथ में नंगी तलवार लिए, अपने भरे मुंह पर जलेबी की तरह बंटखाती बांकी मूंछों वाले सबसे आगे चलने वाले करणा को ही देखती स्तंभित हो गई।

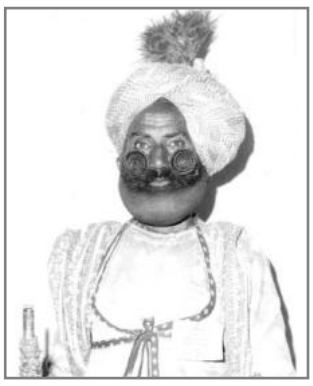

यह पंचम लाकानुरंजन मेला था जो कलामंडल के संस्थापक-संचालक देवीलाल सामर की स्मृति को समर्पित रहा। सन् 1982 की 21 से 23 फरवरी को आयोजित इस मेले में मैंने करणा से उसके जीवन-परिवेश से संबंधित लम्बी बातचीत की।

राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके जैसलमेर के कैया गांव में जन्मे करणा ने बचपन में डाकू जीवन की कई कहानियां सुन रखी थी। इन्हीं कहानियों से डाकूपन की रहस्य एवं रोमांचकारी दास्तानें नजदीक से जानने-देखने की उत्कंठा जगी फलस्वरूप धन माल की कोई कमी नहीं होने पर भी करणा के मन में डाकू बनने की धुन सवार हो गई और पत्नी के बहुत समझाने पर भी 30 वर्ष की उम्र में अपने दो लड़के और एक लड़की को छोड़ डकैती के लिए निकल पड़ा।

सबसे पहले उसने तीन हजार रूपये में एक अच्छी बंदूक और दो हजार में बढ़िया ऊंट खरीदा। आठ-दस व्यक्तियों का एक दल बनाया और निकल गया डाका डालने। पहला डाका मीठी गांव (पाकिस्तान) में डाला। करणा को जहां डाका डालना होता वह पहले से सारी सूचनाएं इकट्ठी करवा लेता। इस काम के लिए दो-तीन आदमी अलग से रहते। पुलिस वेश में सभी लोग हथियारों से लैस हो धमाके से जा पहुंचते और देखते-देखते सारे गांव की नाकेबंदी कर जहां से जितना माल होता लूट ले जाते और दूरदराज फैले-छिपे ऐसे स्थानों में चले जाते जहां आवागमन तक के कोई साधन और न कोई सड़क, पगडंडी ही होती। यहां तक कि पीने को पानी तक नसीब नहीं होता।

करणा ने बताया कि डाका हमेशा रात से पूर्व संध्या-रात्रि को डालते। हमारे पहुंचते ही सारा गांव भयाक्रांत हो जाता। हम परिवार के सभी सदस्यों को ताले में बंद कर देते और गोलियां चलाते। सोना चांदी जेवर जवाहरात माल असबाव जो भी होता सब लूटते। घी, शक्कर, चावल भी खूब लूटते मगर किसी औरत के शरीर पर धारण किया गहना कभी नहीं उतरवाते और न उसके साथ कोई छेड़खानी ही करते।

औरतों को हमने सदा मां-बेटी की इज्जत दी। एक बार हमारे में से ही एक साथी ने एक औरत पकड़ली तो मैंने वहीं गोली से उसका काम तमाम कर दिया। पुलिस से कभी तगड़ी मुठभेड़ हो जाती तो डटकर मुकाबला किया जाता। कभी कोई साथी गोली का शिकार हो जाता तो उसे वहां नहीं छोड़ते अपितु हिम्मत कर अपनी पीठ पर लादे यथास्थान पहुंचते और उसकी मरहम पट्टी करते।

एकबार तो ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि करणा स्वयं अपने ऐसे ही एक घायल साथी को अपनी पीठ पर लादे 40 किलोमीटर तक ले गया मगर पुलिस के हाथ नहीं आया। यही नहीं, कभी कोई साथी पुलिस की गोली का शिकार हो मर जाता तो भी उसे नहीं छोड़ते। एकबार जब उसका एक साथी इसी तरह मर गया और उसे उठा ले जाने का मौका नहीं मिला तो किसी तरह उसका सिर ही काटकर ले आए मगर पुलिस के लिए यह पहचान तक नहीं छोड़ी कि वह मृतक कौन था।

लूटपाट में जितना जो कुछ मिलता आपस में बांट लिया जाता। बहुत सा गरीबों में भी बांट दिया जाता। खाने-पीने की चीजें खूब खाते और मौज मस्ती करते। अपने ऊंटों को भी खूब घी पिलाते और गेटे का मांस खिलाते तभी वे जब चाहो, जितनी दूर चाहो उतनी दूर पलक झपते रास्ता पार कर लेते। अच्छे ऊंटों की वजह से एक ही रात में पाकिस्तान-अफगानिस्तान से लूटमार कर कभी-कभी जैसलमेर भी आ जाते।

करणा की बहादुरी और शूरपन की ढेर सारी बातें जानने के पश्चात जब मैंने उससे पूछा कि आठ-दस वर्ष के अपने डाकूजीवन में कुल कितने डाके डाले तो इस सवाल का सीधा जवाब देने की बजाय उसने यही कहा कि यदि किसी 65 वर्ष के कसाई से पूछा जाय कि उसने कितने बकरे काटे तो वह क्या उत्तर देगा।

करणा ने बताया कि एकबार पाकिस्तान से उसे एक पत्र मिला जिसमें लिखा गया कि हिन्दुस्तान को छोड़कर यदि तुम पाकिस्तान आ जाओ तो तुम्हें रहने के लिए एक लाख का बना सुंदर मकान, सवारी के लिए दस हजार की अच्छी नश्ल का घोड़ा, बीस किलो दूध देने वाली बढ़िया भैंस तथा मनपसंद, बंदूक-पिस्तोल दे दी जायेगी मगर मैं नहीं गया। मेरा निश्चय था कि मैं हिन्दुस्तान का जाया जन्मा हिन्दुस्तान में ही रहूंगा और अंत तक अपने देश की सेवा करूंगा।

करणा डाकू रूप में जितना चर्चित रहा उतना ही चर्चित अपनी मूंछों के लिए भी हुआ। संगीत समारोह हो या कोई मेला ठेला, सब जगह उसकी मूंछें उसे एक अलग हैसियत देतीं। ये मूंछें भी कोई साधारण मूंछें नहीं थीं, पूरी छह फीट आठ इंच लंबी जिन्हें वह बड़े जतन से संभाले रखता। इन मूंछों की सप्ताह में एकबार सफाई की जाती और सरसों के तेल के अलावा मलाई व मक्खन से उन्हें मुलायम, चमकीली तथा खूबसूरत रखी जाती।

अपनी मूंछों पर नाज करते करणा ने बताया कि आदमी की शोभा ही उसकी मूंछें हैं। मूंछ है तो आदमी की पूछ है। मूंछ वाला आदमी सवाया, बहादुर और बांका लगता है। इस संबंध में उसने 'मूंछालो चावल' नामक एक कहावत का जिक्र करते हुए एक किस्सा सुनाया कि रेगिस्तान में निरंतर दस साल तक अकाल पड़ा। ठाकुर के घर में खाने तक को लाले पड़े पर उसे इज्जत तो बनाये रखनी थी। अत: एक चावल पानी में भिगो दिया। जब वह चावल फूल गया तो ठाकुर ने उसे अपनी मूंछ पर रख लिया। लोगबाग ठाकुर साहब के पास आते तो ठाकुर अपनी अकड़ में रहता और मूंछ पर बंट देने का नाटक करता रहता। ऐसे में जब लोगों की निगाह ठाकुर की मूंछ पर पड़ती तो उसमें लगे चावल को देख सभी यह धारणा बना लेते कि भयंकर अकाल में भी ठाकुर के घर खाने को पर्याप्त चावल है इसीलिए एक चावल मूंछ पर रह गया है।

करणा ने बताया कि आठ-आठ, दस-दस आंटे-बांटे खाने वाली उसकी मूंछों से उसमें हर समय शूरापन बना रहता है। उसने यह भी बताया कि उसकी मूंछें कोई साधारण मूंछें नहीं हैं। अपनी मूंछों पर हाथ फेरकर उसने बताया कि मेरी एक तरफ की मूंछ हनुमानजी की तथा दूसरी तरफ की प्रणवीर पाबूजी की है। इन मूंछों को हर किसी की रस्ते चलती फरमाइश पर नहीं खोलता हूं। यदि कोई मेरी मूंछ खुलवाकर देखना चाहे तो एक हजार रूपया उसकी फीस देनी होगी।

मरु मेला तथा अन्यत्र वह लोगों के साथ फोटो खिंचाने की फीस दस-बीस रुपये से लेकर हजार-बारह सौ तक वसूल करता था। पर्यटकों को अपने ऊंट पर सैर कराता। वह डाकू भी बेजोड़ था। उ

सकी मूंछें भी विश्व की सबसे बड़ी मूंछें थीं ओर नड़ बजाने में भी वह अकेला कलाकार था। इसी कारण गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज हो चुका था। पर्यटकों के लिए वह कौतुक बना रहकर अपना नाम प्रसिद्ध किये रखना चाहता था। उसका रंग काला, चेहरा खौफनाक, पहनावा सफेद धोती, कुर्ता-अंगरखा तथा राजस्थानी जूतियों से खूब जचता था।

- शेष पृष्ठ सात पर

डॉ देवदत्त शर्मा नई दिल्ली में सम्मानित

साहित्यसेवी डॉ देवदत्त शर्मा को नई दिल्ली सोपोरो एकेडमी ऑफ म्यूजिक एंड परफार्मिंग आर्ट्स द्वारा आयोजित संगीत समारोह में सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें साहित्य सेवा, संगीत समालोचक तथा सतत सांगीतिक लेखन के लिए जम्मू व कश्मीर के सार्वजनिक निर्माण मंत्री नईम अख्तर द्वारा दिया गया।

सम्मान स्वरूप 11 हजार नगद व स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। इस मौके पर सितार सम्राट स्व. रविशंकर की पत्नी विदुषी श्रीमती सुकन्या, सितारवादिका व सप्तक की विदुषी मंजू मेहता, शास्त्रीय गायक पण्डित विनायक तोरवी, रुद्र वीणा वादक उस्ताद बहाउद्दीन डागर, तबला नवाज अनिंदो चटर्जी, संतूर वादक पद्मश्री भजन सोपोरी, बांसुरी वादक चेतन जोशी, म्यूजिक कंपोजर जसपाल मोनी सहित बड़ी संख्या में संगीत प्रेमी मौजूद थे। डॉ. शर्मा वर्तमान में जयपुर से प्रकाशित स्वर सरिता साहित्यिक पत्रिका के संपादक हैं। वे राज्य के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग में उपनिदेशक भी रहे।

डॉ. भंडारी को डॉ. राष्ट्रबंधु पुरस्कार

राजकुमार जैन राजन फाउण्डेशन, आकोला द्वारा चित्तौड़गढ़ में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय बालसाहित्य सम्मान समारोह में डॉ. विमला भंडारी को डॉ. राष्ट्रबंधु पुरस्कार प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें बालसाहित्य के उन्नयन व बाल कल्याण के क्षेत्र में समर्पित भाव से किये गए सराहनीय योगदान के लिये दिया गया। चित्तौड़गढ़ सांसद सी. पी. जोशी, देवपुत्र के संपादक विकास दवे, गोविन्द शर्मा, जितेन्द्र निर्मोही, प्रो. ए के जैन, चिराग जैन द्वारा सम्मान स्वरूप उन्हें 5100 रुपये की नकद राशि, सम्मान पत्र प्रदान किया गया।

उदयपुर में सरकारी जमीनों पर कब्जे हटाना बड़ी चुनौती : रवीन्द्र श्रीमाली

उदयपुर। यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली ने कहा कि शहर में अतिक्रमण सबसे बड़ी समस्या है। हर तरफ सरकारी जमीनों पर कब्जे हो रहे हैं। उन्हें हटाना सबसे बड़ी चुनौती है। यह बात रवीन्द्र श्रीमाली ने यूआईटी चेयरमैन के रूप में एक वर्ष पूरा होने पर आयोजित प्रेसवार्ता में कही।

श्रीमाली ने बताया कि कभी भी उनकी राजनीति में जाने की अपेक्षा और आकांक्षा नहीं रही। जो भी पद या जिम्मेदारी मिली उसे निभाया। अगले वर्ष उनकी प्राथमिकताओं में बेघरों को घर दिलवाना, शहर को हरा-भरा बनाए रखना, अधिक से अधिक पौधे लगाना, सड़क, पानी, जमीन जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध प्रदान करना है। उन्होंने बताया कि यूआईटी पैराफेरी में कई ऐसे स्थान हैं जहां सड़कें जर्जर अवस्था में पड़ी हैं। सज्जननगर, बेदला, बड़गांव, भुवाणा सहित कई क्षेत्रों में सड़कों का हाल सुधारने की आवश्यकता है। कई क्षेत्रों में नाली निर्माण भी अधूरा पड़ा है।

पिछले वर्ष की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए श्रीमाली ने बताया कि उदियापोल से कुम्हारों का भट्टा तक 60 फीट सड़क बनवाई गई। प्रतापनगर से बलीचा एनएच- 76 बाईपास पर 14 करोड़ से सड़क को चौड़ा तथा एकलिंगपुरा और मादड़ी चौराहे पर अंडरपास का काम शुरू किया।

डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण प्रदेश में सबसे पहले उदयपुर यूआईटी ने शुरू किया। चीरवा टनल पर 90 लाख की लगभग 150 एलईडी लाइटें लगवाई गईं। आवास योजना में लगभग 4000 घर बनाए गए। पौधरोपण अभियान में शहर में 15000 पौधे लगाए। शहरी जन कल्याण शिविर में 1700 पट्टे दिए। फतहसागर किनारे देश का पहला वर्चुअल फिश एक्वेरियम शुरू हुआ।

खोज-खबर

महाराणा मेवाड़ का सज्जनसिंह पुरस्कार

महाराणा मेवाड़ के विवेकवान एवं दूरद्रष्टा वंशधर श्री भगवतसिंह मेवाड़ ने महाराजप्रमुख महाराणा भूपालसिंहजी के बाद गद्दी संभाली। भगवतसिंहजी साहित्य और साहित्यकारों के प्रति गहरी रुचि रखते थे। अपने निरन्तर के अध्ययन में वे मेवाड़ में रचित प्राचीन साहित्य तथा वर्तमान में लिखे जा रहे साहित्य एवं साहित्यकारों के सम्बंध में उपयोगी जानकारी रखने में सदैव तत्पर और क्रियाशील रहते थे।

उन्हीं ने महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन की स्थापना की और प्रतिवर्ष विभिन्न क्षेत्रों में सृजनरत श्रेष्ठ साहित्यकारों, अव्वल खिलाड़ियों तथा होनहार छात्रों को पुरस्कृत एवं सम्मानित करने का सिलसिला शुरू किया। इस क्षेत्र में उनके सलाहकार साथियों में प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ तथा डॉ. एच. आर. त्यागी प्रमुख थे जो मेरे भी अच्छे परिचित थे और आज भी स्नेहशील दोस्ताना सम्बंध बनाये हुए हैं।

एक दिन दोनों महानुभाव मुझसे मिलने आये और भगवसिंहजी मेवाड़ की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक रुचियों के सम्बंध में बहुत सारी जानकारी के साथ इन क्षेत्रों में उनके द्वारा किये जा रहे उपलब्धिमूलक कार्यों से परिचित कराया। उन्होंने यह भी बताया कि मेरे द्वारा कई पत्र-पत्रिकाओं में जो लेख प्रकाशित होते रहते हैं उन्हें वे ध्यानपूर्वक निरन्तर पढ़ते हैं और सराहते हैं। उनकी प्रबल इच्छा है कि वे आने वाले महाराणा मेवाड़ समारोह में मुझे पुरस्कृत करें।

इस पर दोनों महानुभावों ने उनसे निवेदन किया कि जो पुरस्कार प्रारंभ किये गये हैं उनमें डॉ. भानावत नहीं आते हैं। उनका प्रमुख क्षेत्र लोककला, लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य है। यह सुन महाराणा मेवाड़ गंभीर हुए और बोले, पुरस्कार देना अपने हाथ में है। उनके लिए कोई नया पुरस्कार प्रारंभ किया जा सकता है जो प्रतिवर्ष इस क्षेत्र के विद्वानों को दिया जाय। यह सोच उन्होंने महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार प्रारम्भ किया और प्रथम बार सन् 1984 में मुझे प्रदान किया।

इससे भी अच्छी बात यह रही कि इसी समारोह में धर्मयुग के सम्पादक डॉ. धर्मवीर भारती को हल्दीघाटी पुरस्कार, पं. जनार्दनराय नागर को महाराणा मेवाड़ पुरस्कार और अल्लाजिलाईबाई को संगीत का डागर घराना पुरस्कार प्रदान किया।

तब यह समारोह आज की तरह इतने विशाल रूप में नहीं था और समारोह स्थल भी अन्यत्र था। सम्मान में तब 5 हजार रूपयों के साथ चांदी के मोटे पतरड़े पर लिखावट कराई जाकर मढ़ा हुआ मेरे पास प्रशस्तिका नाम से जो प्रशस्तिपत्र सुरक्षित है, उस पर सात पंक्तियों में यह लिखा हुआ है-

प्रशस्तिका

डॉ. महेन्द्र भानावत को / भारतीय परिवेश में / कला विविध कला पूर्ण कला (लोककला) के क्षेत्र में /

जनचेतनार्थ स्थायी मूल्य की सेवाओं के लिए/ महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा / महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार / सादर भेंट

चेयरमेन

उदयपुर

दिनांक : 26 फरवरी 1984

समारोह से पूर्व एक अलग कक्ष में जहां मैं, डॉ. भारतीजी और पं नागरजी मिलबैठ बतिया रहे थे, भगवतसिंहजी मेवाड़ ने हमसे बड़ी आत्मीयता से भेंट की। हमारी कुशलक्षेम पूछी और समारोह की शोभा बढ़ाने के प्रति विनयपूर्वक आभार भी व्यक्त किया। समारोह पश्चात मैं डॉ. भारतीजी को हल्दीघाटी भी ले गया। रास्ते में वे बड़ी देर तक समारोह की अच्छाइयों और उपलब्धियों के साथ महाराणा भगवतसिंहजी के स्नेहिल व्यवहार की भूरि-भूरि प्रशंसा करते रहे। बाद में मैंने समारोह तथा हल्दीघाटी की यात्रा पर एक अच्छी रपट भी धर्मयुग में लिखी थी।

समारोह तो आये दिन, कई जगह, कई रूपों में कई उपलब्धियों के साथ भी होते रहे हैं किन्तु ऐसे कुछ ही समारोह होते हैं जो आजीवन यादगार बने अतीत के गौरव-सुख के साथ वर्तमान का सुख एवं उल्लास प्रदान किये रहते हैं। - **म. भा.**

उदयपुर पर्यटकों का पसंदीदा अवकाश स्थल

झीलों की नगरी उदयपुर को पर्यटकों का पसंदीदा अवकाश स्थल होने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर रनर अप अवार्ड प्राप्त हुआ है। नई दिल्ली के ऐरो सिटी में कोंडे नस्ट ट्रेवलर रीडर्स ट्रेवल अवार्ड द्वारा आयोजित समारोह में श्रीमती दिव्या थानी ने राजस्थान पर्यटक सूचना केन्द्र के श्री छत्रपाल को उदयपुर को फेवराइट लेजर डेस्टिनेशन इन इंडिया का अवार्ड प्रदान किया। इस मौके पर श्रीमती थानी ने कहा कि दुनिया भर में पूर्व का वेनिस और झीलों के खूबसूरत शहर के रूप में विख्यात उदयपुर में हर वर्ष देश विदेश के सैलानी बड़ी संख्या में पर्यटन भ्रमण के लिए आते हैं। पर्यटकों का पसंदीदा अवकाश स्थल होने के साथ- साथ उदयपुर डेस्टिनेशन मैरिज शादी ब्याह के लिए भी मशहूर हो रहा है। इस मौके पर ट्रेवलर ट्रेड से जुड़ी कई जानी मानी हस्तियां और अन्य विशिष्टजन मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों उदयपुर को बेस्ट मैरिज डेस्टिनेशन का अवार्ड भी दिया गया था।

फोटो जर्नलिस्ट गवारिया को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव

उदयपुर। इटली की अन्तर्राष्ट्रीय फोटो मैगजीन इंटरफोटो के वर्ष 2017 के संस्करण में दुनिया के 72 सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफर्स की सूची में उदयपुर के युवा

फोटोजर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया को सम्मिलित किया गया। भारत के सिर्फ दो फोटोग्राफर्स को यह सम्मान दिया गया है जिसमें ताराचंद एक हैं। ताराचंद ने यह फोटोग्राफ जयपुर के गलताजी के मंदिर से लिया है जिसमें एक पर्यटक जब किसी बंदर का फोटो ले रहा था तो एक बंदर उत्सुकतावश कैमेरे के पास पहुंच गया और कैमेरे के लेंस के भीतर झांकने लगा। ताराचंद ने इसी घटना को क्लिक किया और जब इसे इंटरनेट पर डाला गया तो एक दिन में लाखों लाईक्स और शेयर ने इसे पूरी दुनिया में भारत से सर्वाधिक चर्चित फोटोग्राफ बना दिया। इसके बाद तो यह फोटो सोशल मीडिया पर काफी वाईरल हुआ। इस फोटो को सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफ मानते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया गया।

सक्का टॉप वन वर्ल्ड रिकॉर्डस् होल्डर

उदयपुर। उदयपुर के शिल्पकार इकबाल सक्का स्वर्ण शिल्पकारी के क्षेत्र में विश्व के पहले टॉप वन वर्ल्ड रिकॉर्डस् होल्डर बने। उनको यह सम्मान नई दिल्ली के गुलमोहर पार्क स्थित सीरी फोर्ट ओडिटोरियम में इण्डिया बुक ऑफ

रिकॉर्डस् व वर्ल्ड रिकॉर्ड के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में दिया गया।

सक्का ने बताया कि वहां आर्ट गेलरी में 13 देशों के कलाकारों की विश्व स्तरीय कलाकृतियों की प्रतियोगिता के साथ प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में इण्डिया बुक के मुख्य सम्पादक डॉ. बी. आर. चौधरी, वियतनाम रिकॉर्ड बुक के सम्पादक त्रानतौंगएन, नेपाल बुक ऑफ रिकॉर्डस् के डॉ. दीपकचन्द्र सेन, एशिया बुक के प्रेसीडेंट पोनीजन लियांव व बांग्लादेश रिकॉर्ड बुक के मुख्य गोविन्ददास आदि ने सक्का की स्वर्ण शिल्प कलाकृतियों का चयन कर विश्व के पहले टॉप वन रिकॉर्ड होल्डर होने की घोषणा की और स्वर्ण पदक व प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

धातु विज्ञान पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने डॉ. पॉल टी. क्रेडाक, के.टी.एम. हेगडे, एल.के. गुर्जर एवं एल. विलीज द्वारा 'प्रारंभिक भारतीय धातु-विज्ञान' पर

आधारित पुस्तक का प्रधान कार्यालय में लोकार्पण किया। इस अवसर पर सुनील दुग्गल ने कहा कि इस क्षेत्र को संग्रहालय के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है जिससे आम जन और पर्यटकों को इस समृद्ध हमारी विरासत से अवगत कराया जा सके।

इस पुस्तक में राजस्थान के अरावली पहाड़ियों में प्रारंभिक धातु विज्ञान, उत्तर पश्चिम भारत में तीन सदियों से सीसा-जस्ता एवं चांदी का उत्पादन, हिन्दुस्तान जिंक्र की स्थापना जावर, राजपुरा-दरीबा एवं आगुचा खदानों के इतिहास एवं स्मारक का वर्णन, खनन प्रचालन का अनुसंधान, धरातलीय स्थलों पर सर्वेक्षण एवं उत्खनन, खदानों में औद्योगिक सामग्री का वैज्ञानिक परीक्षण, लाभकारी खनन, चांदी उत्पादन की प्रक्रिया, जस्ता एवं ब्रास का उत्पादन तथा 17वीं से 21वीं सदियों के दौरान विलुप्त और पुनरूद्धार- भारतीय उद्योग का विस्तृत वर्णन किया गया। पुरातात्विक सर्वेक्षण के अनुसार राजस्थान की अरावली पहाड़ियों के तीन प्रमुख स्थानों जावर, दरीबा एवं आगुचा में धातु एवं खनन किया जाता था। उदयपुर से 45 कि.मी. दक्षिण में स्थित जावर की पहाड़ियों में आज से 3000 वर्ष पूर्व जस्ता-सीसा धातु का खनन एवं प्रद्रावण किया जाता था। आज भी मुख्य धातु के रूप में जस्ता तथा चांदी का उत्पादन किया जा रहा है।

जिंक्र के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने कहा कि सग्रहालय बनने से देश-विदेश के पर्यटकों, आम जनों एवं विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। विश्व में सबसे पहले जस्ता-सीसा का उत्पादन भारत में हुआ था तथा इसका केन्द्र जावर रहा।

समारोह में हिन्दुस्तान जिंक के पूर्व निदेशक (खनन) एच.वी. पालीवाल, पूर्व वरिष्ठ खनन अधिकारी कानसिंह चौधरी, वरिष्ठ भू-विज्ञानी एल.के. गुर्जर, निदेशक (प्रोजेक्टस) नवीनकुमार सिंघल, हेड-कार्पोरेट (रिलेशन्स) प्रवीणकुमार जैन सहित वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 दिसम्बर 2017

सम्पादकीय

पद्मावती का विरोध

चित्तौड़ की रानी पद्मावती पर बनी फिल्म का चारों ओर विरोध होने लगा है। इतिहास की परतों में कई चीजें छिपी हुई हैं। उन्हें न छेड़ो तो वे यूं की यूं बनी रहती हैं। छेड़ने पर कई बार कोई हलचल नहीं होती है तो कई बार ऐसी होती है कि उस पर काबू पाना भी मुश्किल हो जाता है।

यह सब होता आया है और आगे भी होता रहेगा। प्रकृति का ही यह नियम है। संजय लीला भंसाली द्वारा निर्मित फिल्म अभी रिलीज नहीं हुई है। यह श्रेय भी इसी फिल्म को मिलना चाहिये कि रिलीज होने से पूर्व जो इसका विरोध हुआ वैसा पहले किसी फिल्म का नहीं हुआ। इससे जन-जन में उसका नाम ऐसा ध्वनित हुआ कि जो लोग कभी फिल्म नहीं देखते उनकी भी जिज्ञासा-उत्सुकता बढ़ी कि वे फिल्म को अपनी आंखों से एकबार ही सही, निहारना चाहेंगे।

पद्मिनी का इतिहास जो भी रहा हो, लोग तो उसे उसकी सुन्दरता की वजह से ही जानते हैं। ऐसी सुन्दर वह थी कि उसके पहले और उसके बाद भी आज तक ऐसी रानी नहीं हुई। स्कूलों में छोटी कक्षाओं से लेकर बड़ी कक्षाओं में भी पद्मिनी का जो वर्णन पढ़ा, पढ़ाया गया, वह यही था।

इतिहासकार भी पद्मिनी को लेकर एक मत नहीं हैं। फिर प्रश्न-दर-प्रश्न कई उठते रहते हैं। इतिहास के वे कौनसे बिन्दु हैं जो असल हैं और कौनसे ऐसे हैं जो काल्पनिक हैं किंवा इतिहास के साथ छेड़छाड़ करने वाले हैं। यह स्थिति भी स्पष्ट होनी चाहिये।

कई बार ऐसी हवा भी चल निकलती है जो सब ओर दस्तक तो देती है पर क्या कहना चाहती है, आशय स्पष्ट नहीं होता। भीड़ जो साथ हो जाती है वह जरूरी नहीं कि स्थितियों को समझकर हो रही है। कहा जाता है कि लोकतंत्र में अभिव्यक्ति का सबको अधिकार है। बेसक है पर वह समझदारी की, शालीनता की, सौहार्द्र की, सबको शोभित लगे, वैसी होनी चाहिये। तोड़फोड़ की, आक्रामक तेवर की, गुस्साई की, हिंसा की, मारकाट की, निरर्थक परिणाम की, होड़ाहोड़ी की, अपमानित करने की, निरर्थक रोष प्रकट करने की नहीं होनी चाहिये। इससे सभी पक्ष आहत होते हैं और कोई सार्थक परिणाम हाथ नहीं लगता है।

देश के कई राज्यों में फिल्म के प्रदर्शन पर बेन लग गया है। यह हाका, हाहाकार बढ़ता जा रहा है तो हिंसाजनित बहाव को रोकने के लिए सब जगह बेन लग सकता है। संवैधानिक स्थिति अभी मौन है पर यह तो स्पष्ट ही है कि हमें अपनी अभिव्यक्ति की पूरी-पूरी स्वतंत्रता है। यह स्वतंत्रता रहनी भी चाहिये। जब-जब भी इस पर आंच आई लगी, सबने भरपूर विरोध किया है पर हमें हिंसक मार्ग अपनाने की और कानून हाथ में लेने की कोई स्वतंत्रता नहीं है।

अपनी बात में वजन लाने के लिए, हम दूसरों पर दबाव डालने के लिए अपनी आंखें तेज तो कर सकते हैं मगर दूसरों की आंखों को नुकसान पहुंचाने या कि उनकी आंखें बाहर निकालने की हमें स्वतंत्रता नहीं है।

हमारा समाज मानव समाज है। पशु-समाज या मानव से इतर समाज नहीं है। अत: समस्याएं जो भी आयें, उठें, हमें मिलजुलकर, आपसी समझाइश द्वारा सौहार्द्रपूर्ण तरीके से उसका हल खोजना चाहिये। यदि मनुष्य-मनुष्य का वैरी हो जाएगा तो फिर हमारे पास भाईचारे के लिए, हेलमेल, मेलमिलाप के लिए बचेगा ही क्या!

रानी पद्मिनी ने जिस होशियारी से, बुद्धि-चातुर्य से और नीति-निपुणता से समस्या का निराकरण किया और अपने शील, अपनी मर्यादा तथा मेवाड़ की आन-मान का परिचय दिया, उसके नाम पर, उसके लिए हम भी वही सब करें जो सबको सुहावना लगे और जो इतिहास उसके गौरव को बढ़ाता रहा, उसे अक्षुण्ण बनाये रखें। तवा गर्म है। इसका मतलब यह नहीं कि हर व्यक्ति अपने मनचाहे तरीके से उस पर रोटी सेक सके। वह चाहे तो रोटो को कच्ची रखदे, चाहे तो जलादे। रोटी सेकने के लिए तवे की आंच की परख होनी भी जरूरी है। कभी-कभी रोटी तो जली सो जली, मगर सेकने वाले के हाथ भी झुलस जाने का भय बना रहता है।

गढ़वाल में बद्री-केदार तो कुमाऊं में प्रसिद्ध है छिपला केदार

- दिनेश रावत -

भारत भू-भाग का मध्य हिमालय क्षेत्र विभिन्न देवी-देवताओं की दैदीप्यमान शक्ति से दीप्तिमान है। इसी मध्य हिमालय के लिए 'हिमवन्त' का वर्णन किया गया है। धार्मिक साहित्य यथा 'केदारखण्ड' (अ.101) में 'हिमवत्-देश' कभी केवल केदार देश को ही माना गया है। हिमवन्त के अन्तर्गत अनेक पर्वतों का वर्णन है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं- (1) गन्धमादनपर्वत : यह बदरिकाश्रम से सम्बद्ध गढ़वाल का महा-हिमवन्त है। 'कैलास पर्वत श्रेष्ठे गन्धमादनपर्वत' (केदारखण्ड, अ. 60)। हरिवंश पुराण के अनुसार यह राजा पुरूरवा और गान्धर्वी उर्वशी का रमण-स्थल माना गया है। तीर्थयात्रा काल के दौरान पांडवों ने यहाँ प्रवेश किया था, जहाँ बदरीविशाला तथा नरनारायणाश्रम हैं। (2) शत श्रृंग पर्वत : इसे पांडु की तपस्या स्थली के रूप में जाना जाता है। सन्तान प्राप्ति की कामना के साथ पांडु ने इसी पर्वत पर कुन्ती व माद्री के साथ तपस्या की थी जिसके उपरान्त उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इस प्रकार से मध्य हिमालय क्षेत्रान्तर्गत गढ़वाल मंडल में जहाँ बदरी-केदार धाम विश्व प्रसिद्ध हैं वहीं कुमाऊँ मंडलान्तर्गत केदार को ही 'छिपला केदार' के रूप में पूजा जाता है। स्कनंद पुराण का केदारखण्ड जहाँ गढ़वाल क्षेत्रान्तर्गत आने वाले देवस्थलों का दिग्दर्शन करवाता तो वहीं मानसखण्ड से कुमाऊँ मण्डल विवरण प्राप्त होता है।

सांसारिक चहल-पहल से दूर मध्य-हिमालय का यह क्षेत्र आज भी, लोक संस्कृति के विविध रंगों से रंगा नज़र आता है। यह इसकी विशिष्टता ही है कि यह अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को वर्तमान में भी अक्षुण्ण बनाये हुए है। देव पूजन, वन्दन, साधना, आराधना की पद्धति आमूलचूल परिवर्तनों के साथ विधिवत् जारी है। यहाँ होने वाले लोकोत्सवों में मेले, थोले, कौथिग, देवयात्राएं इत्यादि प्रमुखता से शामिल हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में होने वाले अधिकांश मेले धार्मिक आस्था से लबालब होते हैं। इनके आयोजन भी अधिकांशत: देवस्थलों या उसके इर्द-गिर्द ही होते हैं। इसके पीछे लोकवासियों की गहरी आस्था व विश्वास परिलक्षित होता है। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले जन-मानस के लिए ये आयोजन आस्था के साथ-साथ मेल-मिलाप, आमोद-प्रमोद व मन रंजन के भी महत्वपूर्ण साधन होते हैं। मध्य-हिमालय की इस पर्वत श्रृंखला में एक तरफ जहाँ बद्री-केदार जैसे पावन धाम अवस्थित हैं, वहीं दूसरी तरफ पंचाचूली की पहाड़ियों को छिपला केदार की भूमि मानी गयी है। छिपला केदार के दर्शनार्थ प्रत्येक तीसरे वर्ष स्थानीय लोगों द्वारा देवयात्रा का आयोजन किया जाता है। इसमें सभी श्रद्धालु पूरे नित-नियम के साथ शामिल होकर खुद को पुण्य का भागी बनाते हैं।

बालक, वृद्ध, तरूण सभी हाथों में रंगीन ध्वजाएं थामें, ऊँची-नीची पगडंडियों पर चढ़ते-उतरते हुए वातावरण को आह्लादित करने वाले जयकारों के उद्घोषों के साथ, घंटियों की टंकार, शंख ध्वनि, लोकवाद्यों की मधुर धुनों के बीच जब छिपला केदार दर्शन के लिए प्रस्थान करते हैं तो दृश्य देखते ही बनता है। दुर्गम पहाड़ियों को लाँघ-फाँदकर भोर में सूर्योदय के साथ ही घर, गाँव से चले जत्थे, दिनभर का कठिन सफ़र तय करने पर देर रात तक बाबा के दरबार में 'भनार' नामक स्थान पर पहुंचते हैं। हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य, खुले अम्बर तले, प्रकृति की गोद में, रोंगटे खड़े कर देने वाली शीतल समीर के साथ बाबा केदार का स्तुतिगान करते हुए कब रात्रि की काली घटाएं छंटकर दिशाएं दीप्तिमान होने लग जाती हैं, पता भी नहीं चल पाता।

सूर्य का अभ्युदय हो, उससे पहले ही श्रद्धालु आकार में छोटे मगर पावन सरोवर में स्नान करके खुद को पुण्य का भागी बनाते हैं। छिपला केदार को अपना आराध्य देव मानने वाले क्षेत्र के तमाम लोग तत्पश्चात् यहीं पर अपने नौनिहालों का चूड़ाकर्म एवं जनेऊ संस्कार सम्पन्न करवाते हैं। इसे लोकभाषा में 'व्रत पूजना' कहा जाता है। स्नान, पूजा, अर्चना के पश्चात् किसी व्यक्ति के शरीर में देवात्मा प्रविष्ट करती है और वह गुफा के अन्दर प्रवेश करके वहाँ से जल की गागर भरकर बाहर लाता है। इसे वहाँ पहुँचे सभी भक्तों में प्रसाद स्वरूप बाँटा जाता है। अमृत कलश रूपी इस जल को ही लोकवासी बाबा के प्रसाद व आशीर्वाद के रूप में घर लेकर आते हैं और शेष सभी परिजनों में वितरित करते हैं।

यात्रा से लौटता श्रद्धालुओं का जत्था जैसे ही गाँव के समीप पहुंचता है ग्रामवासी पुष्पमालाओं से यात्रियों का स्वागत करते हैं। तत्पश्चात् घर में भी परम्परानुसार पूजन, वन्दन होता है। जिस बालक का चूड़ाकर्म व जनेऊ संस्कार होता है उसके परिजन अपने घर में सहभोज का आयोजन करते हैं। इसके लिए सभी ग्रामवासियों, नाते-रिश्तेदारों को सादर आमन्त्रित किया जाता है। घर पहुँचे सभी बड़े-बुजूर्गों द्वारा सम्बंधित बालक को टीक, चंदन, गंध, अक्षत, दान-दक्षिणा तथा दुर्बाकुर देकर मंगलकामनाएं दी जाती हैं। इस प्रकार से छिपला केदार की यह यात्रा सम्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त यहाँ कई लोग मन्नत मानने भी आते हैं और मनवांछित फल प्राप्त होने पर पुन: बाबा के दर्शनार्थ आने का भी प्रयास करते हैं।

महिलाएं कुरीतियां दूर कर जागरूकता लाएं

उदयपुर। महिलाएं व्यावसायिक एवं शैक्षणिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा अपनी क्षमताएं बढ़ाकर आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त बन समाज में मिसाल कायम करें। स्वयं आत्म निर्भर बनें और समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करें। विकास के साथ महिलाओं को कौशल विकास द्वारा भी आत्म निर्भर बनाया जा सकता है। ये विचार जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ कुल द्वारा संचालित आंगनवाड़ी कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र की ओर से राजसमन्द, बांसवाड़ा व उदयपुर जिले की महिलाओं के लिए आयोजित प्रशिक्षण के समापन समारोह पर कुल प्रमुख भंवर गुर्जर ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये। अध्यक्षता करते हुए डॉ. शेलेन्द्र मेहता ने आंगनवाड़ी महिलाओं को शाला पूर्व शिक्षा प्रदान करने को रीढ़ की हड्डी बताया जो बच्चों की नीव को मजबूत बनाने का कार्य कर रही हैं। प्राचीनकाल से ही महिला किसी न किसी क्षेत्र मे अपनी दक्षता रखती आई हैं लेकिन वर्तमान परिवेश में इसका स्वरूप बदल गया है। केन्द्र प्रभारी नन्द कुंवर ने बताया कि शिविर में 35 महिलाओं ने भाग लिया। समारोह में अतिथियों द्वारा महिलाओं को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। समारोह का संचालन रेखा राठौड़ ने किया। धन्यवाद सरिता वसीटा ने दिया। समारोह में प्रशिक्षणार्थी सरोज कंवर, गीता, धूलीबाई, कंचन, दुर्गा ने भी विचार व्यक्त किये।

पोथीखाना

ईडर में वनवासी साहित्य संवाद

कभी-कभी महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पढ़ाई से भी अधिक उपलब्धिपूर्ण कार्य उनके द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन माना जाता है। एक नई हलचल, संवाद, विद्वत् चर्चा और मेलजोल हेलमेल से नई ताजगी मिलती है। नये गवाक्ष खुलते हैं और स्थायी रिश्तों की जुगाड़ बनती है। ऐसी ही एक राष्ट्रीय संगोष्ठी 11-12 मार्च 2011 को ईडर में वहां के आंजणा पाटीदार एच. के. एम. आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज में हुई।

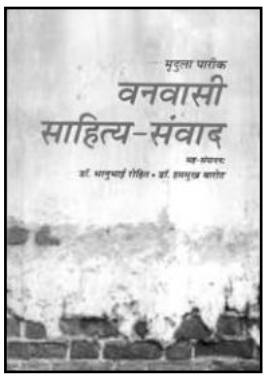

यह एक यादगार उपलब्धि रही इसलिए भी कि ईडर में हुई। कॉलेज हमारा परिचित नहीं पर विद्वानों का जिस ओज, उत्साह और आत्मीयता से स्वागत किया, बेजोड़ ही लगा। फिर हमारे कई परिचित मित्र मिल गये सो आनंद में उछाल आ गया। आयोजक-संयोजक मृदुला पारीक का सर्वतो सराहनीय स्नेहिल सत्कार सहकार और संयोजन भी बेमिसाल था। ऐसे महाविद्यालय कम ही होते हैं जहां के सभी मनीषी मीमांसकों ने हमें सदैव के लिए आत्मीय कर लिया।

वहां भी वह सब हुआ जो सब कहीं होता है। जितने अच्छे पत्रवाचन हुए, आपसी संवाद और वनवासी जीवन संस्कृति के विविध पक्षों पर जो ज्ञान सागर उफना उसी के अनुरुप सभी पत्रों को प्रकाशित करने की घोषणा किसी मन्दिर के जोरदार घंटे की टंकार के साथ गुंजित होती रही।

यह सत्य है कि घोषणाएं किसी मर्यादा में बंधती नहीं हैं सो हम भी दो-चार वर्ष तो बेसब्री से प्रतीक्षारत रहे पर बाद में विस्मृति में चले गये। ऐसे में पिछले दिनों जब वनवासी साहित्य-संवाद पुस्तक प्राप्त हुई तो लगा कि इसी को देखने के लिए आयुष्मान बने हुए हैं।

कहते हैं, लम्बी आयु कम आनंददायक होती है किन्तु जब होती है तो पिछली सारी आनंददायी उपलब्धियों से सवाई होकर सिर चढ़ती है सो वैसा ही 'देर से आई दुरस्त' कथन को चरितार्थ करती यह पुस्तक 4740 / 23 अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित हुई। लगा 895 रूपये कीमती इस पुस्तक में जिन विद्वानों के आलेख दिये हैं वे आलेख और लेखक भी अधिक मूल्यवान बन गये हैं। गुजरात, राजस्थान और मध्यप्रदेश के आदिवासियों से सम्बंधित कुल 16 आलेखों में डॉ. हंसु याज्ञिक, बसंत निरगुणे, डॉ. पूरन सहगल, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. भगवानदास पटेल, डॉ. महेन्द्र भानावत, मृदुला पारीक, विमला भंडारी, डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत, डॉ. मनमोहन शर्मा, डॉ. ऊजमभाई पटेल, डॉ. जसवंत एस. पाठवा, डॉ. भरत आर. बोदर, प्रा. दिनेश बी. मुनिया, परम पाठक तथा सुभाष इशाइ के लेख कई तरह की नई जानकारी, नई शोध तथा नये प्रस्तुतीकरण के कारण अधिक पठनीय हैं।

जीवनमूल्यों की खोज देती कुछ-कुछ में सब कुछ

मानवीय संवेदनाओं को विविध भावों तथा कल्पनाओं के माध्यम से सार्थक शब्दों में संपोषित करना साहित्य का श्रेष्ठत्व है। गद्य और पद्य से जुड़े अनेक माध्यमों में इसकी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

सुधी लेखक प्रेमचन्द कोठारी 'आनंद' ने अपनी 'कुछ-कुछ में सब कुछ' कृति में गद्य तथा पद्य में सीधा-सीधा, सरल-सरल और पूरा-पूरा संक्षेप में कहने का लक्ष्य साधा है। जो कुछ कहा है वह झटपट समझ में आ जाता है और कभी प्रयत्न करने पर भी समझ में नहीं आकर पहेली बना रहता है। जैसे-

(1) मैं शरीर में हूं, मैं शरीर नहीं हूं।
(2) ध्यान नहीं है एकाग्रता। ध्यान है जागरूकता।
(3) मेरे सिवा मुझे सब पता है, यही तो खता है।
(4) संसार छोड़ें या न छोड़ें, संसार को पकड़ छोड़ें।

स्व कथ्य में रचनाकार ने लेखन का मंतव्य स्पष्ट करते कहा है- मैंने अपनी सच्ची अनुभूतियों की अभिव्यक्ति देने हेतु क्षणिका, हाइकू एवं स्वयं से स्वयं का वार्तालाप की पद्धति का आश्रय लिया है। मेरा यह तीन विधि का त्रिधा काव्य है।

सूक्ति और उक्तिमय रचना में भी कथ्य की धारा तो वही है, केवल उन्हें दो-दो पंक्तियों में सजाया गया है। ऐसी कुल 196 बतियायें हैं। यथा-

(1) कल कभी नहीं आता प्रेम ! कल आएगा भी तो आज होकर। (10)
(2) किस पर भरोसा कर रहा है प्रेम! क्या तेरा भरोसा है? (28)
(3) जगत में नाक रखती है प्रेम! तो पहले आंख संभाल। (46)
(4) हार से घबरा मत प्रेम! यहां हार में से जीत निकल आती है। (196)

हाइकू केवल तीन छोटी-छोटी पंक्तियों का काव्य होने से इसे नन्हा काव्य भी कहा गया है। इसका कथन संकेत मात्र होता है और पूर्णता के लिए पाठकों की कल्पना शक्ति पर छोड़ दिया जाता है। कहीं-कहीं पादपूर्ति के लिये अन्त में कोष्ठक में चौथी लाइन जोड़ दी जाती है। यह अध्यात्म, प्रेम, बचपन, सामाजिक, राजनीति तथा राष्ट्रभाषा नामक खंडों में विभक्त है। नमूनार्थ -

(1) घरों में मान / व दिलों में भी मिले / राष्ट्रभाषा को।
(2) जो पास में है / वो दिखते ही नहीं / आदत नहीं।
(3) ज्ञानी अक्सर / अज्ञानियों के बीच / महा अज्ञानी (तभी सूली चढ़ाते)

संग्रह की यह सामग्री रचनाकार के आनंद की मौज ही कही जा सकती है। इसका साहित्यिक अवदान कितना होगा, क्या होगा, होगा भी कि नहीं, पाठकों पर ही छोड़ना पड़ेगा हालांकि प्रारंभिक बीसेक पृष्ठों में जो विभिन्न अभिमत हैं वो यही कहते हैं- समझ को बेसमझ कहना ही समझ है। समझ ही बेसमझ है।

- सत्पुरुष

मेवाड़ की मर्यादा के परम्पराशील सहिष्णु

श्री मुहम्मद हुसैन 'वफा' से मेरा 18 नवम्बर 2017 को पहली बार मिलना हुआ। इनके पूर्वज मेवाड़ रियासत के मशवराकार रहे हैं। इसके सम्मानस्वरूप न केवल महाराणा मेवाड़ की ओर से अपितु बदनौर ठिकाने की ओर से भी जागीर प्रदान की गई। मुहम्मद हुसैन (80) परम्परागत चली आ रही उस श्रेष्ठ परम्परा का आज भी पूर्ण आस्था के साथ वहन कर रहे हैं। यही नहीं, राजनीति के क्षेत्र में भी इनका योगदान रहा है।

मेरी इस मुलाकात में मेवाड़ राजघराने से लेकर साहित्य, समाज, संस्कृति के साथ ही आजादी के बाद की राजनीति और जीवन व्यवहार में हो रहे बदलाव पर उन्होंने बड़े सहज अन्दाज में जो बातें बताईं वे मेरे लिए अब तक सर्वथा अजानी-छानी थीं। उन्होंने बताया भी कि हमारे द्वारा जो कुछ सलाह-मशवरा होता, वह नितान्त गोपनीय रहता। तीसरा कान भी नहीं जान पाता बल्कि कोई हवा तक उसे नहीं पकड़ पाती। अपने दादा अब्दुल रहमानजी तथा पिता अलादीनजी से जो कुछ सुना समझा उसे वे हू-ब-हू हृदयंगम किये हुए हैं।

मुझसे बातचीत में उन्होंने सजहमेव अतीतकालीन उन अनेक घटनाओं, तथ्यों से जुड़ी बातों का जिक्र किया उससे बड़े रसीले अन्दाज में लगा जैसे उनके पास अकूत खजानों की अनेकानेक परतें गुप्त बनी हुई हैं। उनके कहने-सुनाने का लहजा ही आनंद-विभोर करने वाला और उत्सुक-जिज्ञासा का निरन्तर ऐसा प्रवाह दिये रहा कि चार घंटे का समय व्यतीत होने पर भी प्यास बुझी नहीं। मुझे वे मेवाड़ के कंठासीन इतिहास के सजीव और एक जीवन्त विवेचनीय व्याख्याकार लगे। अपनी बातचीत में मैंने लोकसंस्कृति के क्षेत्र में देवीलाल सामर द्वारा किये गये कार्यों और इस क्षेत्र में मेरी दिलचस्पी के सम्बंध में बताया तो उन्होंने एक मजेदार घटना का उल्लेख करते हुए बताया कि सन् 1956 के किसी महीने में सामरजी ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में महाराणा भूपालसिंहजी को आमंत्रित करना चाहा। मोहम्मद हुसैनजी के दादा अब्दुल रहमानजी जब महाराणा की सेवा में पहुंचे तो उसका जिक्र चला और महाराणा साहब ने जानना चाहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम क्या होता है। अब्दुल रहमानजी ने मेवाड़ की आन-बान-शान से बंधी मर्यादा-बोध की परम्परानिष्ठ संहिता का ध्यान रखते जवाब दिया- 'हजूर पहले अन्नदाता ऊपर बिराजकर नीचे नाच-गान देखते-सुनते थे, अब हुजूर तो नीचे बिराजेंगे और ऊपर नाचने-गाने वाले होंगे।' इसके बाद महाराणा साहब ने किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग नहीं लिया। मैंने मोहम्मद हुसैनजी से सवाल किया कि यदि मेवाड़ के इतिहास को बांधना चाहें तो एक वाक्य में कैसे बांधेंगे तो वे तत्परता से बोले- 'मेवाड़ तलवार की धार का इतिहास है, कलम की धार का नहीं।'

इस अवसर पर मोहम्मद हुसैनजी शोरगर 'वफा' ने हाल ही में प्रकाशित अपनी 'अलख ज्ञान गंगा' नामक पुस्तक मुझे भेंट स्वरूप दी। लेखक ने इसका मकसद इन शब्दों में व्यक्त किया है- 'दुनिया में किस हद तक किसको जिन्दा रहना है। ये जानदार जिस्मों के बस में नही है। रब ने इन्सान को बेहतर जिन्दगी जीने के लिए अक्लेसलीम अता की है जिस पर अमली तौर पर चलकर इन्सान आला से आला मकाम हासिल कर सकता है। यह किताब इसी मकसद को मद्देनजर रखते हुए लिखी गई है।'

सौभाग्य मुनि 'कुमुद' ने मंगल मनीषा में लिखा- 'देश-विदेश के हजारों चिन्तकों को भारतीय संस्कृति के विशिष्ट तत्वों ने आकर्षित किया और उन्होंने इसके सांस्कृतिक, आध्यात्मिक सत्य को अनेक तरह से अभिव्यक्त किया। हमारे आत्मीय श्री मोहम्मद हुसैनजी ने भारतीय संस्कृति एवं इसके मौलिक आध्यात्मिक सत्य को निकट से जाना और पहचाना। कवि हृदय होने से उन्होंने उन विशिष्ट तत्वों को पद्य का रूप देकर उपस्थित किया जो पठनीय और चिंतनीय है।'

पुस्तक में कुल 45 विषयों पर एक-एक छंद लिखकर उनकी विवेचन-व्याख्या की गई है। आशा है,यह पुस्तक पाठकों में उपयोगी तथा महनीय ही सिद्ध होगी।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

विविधरूपा धरा पोषक शोषक मारक तारक विस्तारक

विविधरूपा धरा मातृत्व गुण लिए हुए है। इसका ममत्व आंचल है। देहधारी सभी प्राणियों के उदर भरण के लिए यह कण की उपज पैदा करती है। वृक्ष से अनेक प्रकार के फल व औषधी जीवन रक्षा हेतु पैदा किये।

वह अनादिकाल से अपना वैभव मनुज के हितार्थ प्रदान करता रहा है। मनुज को जब आखेट का सहारा लेना पड़ा तो प्रस्तर द्वारा जीव हन्ता बना। जब धातु उपयोग का ज्ञान हुआ तो उसने जीवों को मारने के लिए तीर, तलवार, कुल्हाड़ा, फर्सा, गदा बन्दूक तोप व अणु से परमाणु तक के विनाशकारी आयुध तैयार किये।

चांदी, सोना, कनक द्वारा धन का निर्माण किया। सिक्के बनाये। वस्तु विनियम हेतु कनक, कंचन का उपयोग होने लगा। खनिज द्वारा दुर्लभ धातुओं को महत्व देकर शरीरिक श्रृंगार के आभूषण तैयार किये। पत्थरों से हीरा, माणिक, पन्ना तथा जल से निर्मित सीप से मोती व मूंगा का उपयोग होने लगा।

मनुष्य ने दूसरे जीवों के लिए भी श्रृंगार कर अपने वैभव का प्रदर्शन किया। धीरे-धीरे वस्तु को माया का स्वरूप देकर लोभ का वरण किया जो आगे के विनाश का कारण बनता गया। लोभ की महादशा ने मनुज के रिश्तों को हत्या में बदल दिया। पिता, पुत्र, पत्नी, बहिन, भाई सभी परिवारजन इस क्लेश से ग्रसित हुए। धरा लोभ की जननी है। अन्य जीवों में लोभ का जागरण पैदाकर संघर्ष कराती है। इसके आचरण का उद्वेग मनुष्य में काम, लोभ और मोह पैदा करता है। इस दृष्टि से धरा स्वयं कामुक है। क्रोधी है। कम्प, भूकम्प, ज्वालामुखी इसके स्वयं के आचरण में समाहित हैं। धरा लोभ है। मोह है। इससे वशीभूत मनुष्य इस प्रकार बंध गया है कि वह जब तक विदेह व निर्मोह भाव अपने में स्वयं पैदा न कर ले, इस बंधन से मुक्त नहीं हो सकता। धरा ब्रह्म गुणी है जो सकल जगत को निर्माण के लिए प्रेरित करती है। मनुष्य ने इसमें कुछ और अधिक उपलब्धि प्राप्त कर, अपनी सुरक्षा के लिए कई जतन किये। अपने लिए भवन बनाये। अट्टालिकायें बनाई।

महल बनाये। किले बनाये और आनंद आमोद-प्रमोद के लिए वन उपवन, फूल फूलवात लगाये। अच्छे जीवन के लिए जल की सुरक्षा की। कृषि उपयोग के लिए पोखर बनाये। नदियों का पानी रोका। बांध बनाये। आनंद के लिए सरोवरों का निर्माण किया। धरा अन्तर्मुखी, बहुर्मुखी समान आचरण करती है। धरा पोषक भी है और विनाशक भी है।

- मोहम्मद हुसैन शोरगर वफा'

केटीएम द्वारा स्टंट शो का आयोजन

उदयपुर। यूरोपीय रेसिंग दिग्गज केटीएम द्वारा रविवार को उदयपुर के नगर निगम प्रांगण में केटीएम स्टंट

शो का आयोजन किया जिसमें पेशेवर स्टंटमैनों ने हैरतअंगेज स्टंट से दर्शकों को मोहित कर दिया। इसका आयोजन पेशेवर स्टंट राइडर्स के उम्दा स्टंट राइड्स एवं ट्रिक्स का प्रदर्शन करने के लिये किया गया। बजाज ऑटो लि. के प्रेसिडेंट-प्रोबाइकिंग अमित नंदी ने कहा कि केटीएम अपनी उच्च प्रदर्शन वाली रेसिंग बाइक्स के लिए विख्यात है।

कंपनी हमेशा ग्राहकों को केटीएम बाइक द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले रोमांच एवं उत्साह का अनुभव कराने के इच्छुक है।कंपनी द्वारा प्रत्येक बड़े शहर में पेशेवर स्टंट आयोजित होते हैं और अगले कुछ महीनों में इनके पैमाने में और बढ़ोतरी होगी। अभी तक केटीएम स्टंट शो का आयोजन कांचीपुरम, कोयंबटूर, चेन्नई, विजयापुर, लखनऊ, इंदौर, जबलपुर, सूरत, औरंगाबाद, जम्मू, राजकोट, जालंधर, जोधपुर, जयपुर, वाराणसी, कोटा, अजमेर, अलवर सहित कई अन्य शहरों में किया जा चुका है। प्रशंसक केटीएम की बाईक केटीएम पारस सर्किल, राजमन्दिर उदयपुर से केटीएम बाइक्स की श्रृंखला खरीद सकते हैं।

एचडीएफसी बैंक का एचआरडीपी अभियान

उदयपुर। उत्तर-पूर्व भारत स्थित एक छोटा सा गांव एचडीएफसी बैंक के होलिस्टिक डेवलपमेंट प्रोग्राम (एचआरडीपी) के तहत 750वां गांव बना। इस कार्यक्रम के द्वारा अंपाथौ के 550 निवासियों को पेयजल, बच्चों को स्वच्छ टॉयलेट्स के साथ स्मार्ट स्कूल उपलब्ध कराया गया है। बैंक के बोर्ड ने वर्ष 2019 तक ऐसे 1,000 गांवों को लाभान्वित करने का आदेश दिया है। इस अभियान ने अब तक देश के 16 राज्यों में 10 लाख से अधिक लोगों की जिंदगियों को लाभान्वित किया है।

एचडीएफसी बैंक के डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर, परेश सुक्थांकर ने कहा कि एचआरडीपी एचडीएफसी बैंक के समाज विकास के कार्यक्रमों के लिए इसके ध्वज वाहक ब्रांड, परिवर्तन का मुख्य सीएसआर अभियान है। यह 5 प्रमुख क्षेत्रों में सुधार पर केंद्रित होकर ग्रामीण जीवन बेहतर बनाने का प्रयास करता है। जिसमें शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण एवं आजीविका सुधार, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन, पानी एवं स्वच्छता एवं वित्तीय साक्षरता एवं समावेशन शामिल है।

एचआरडीपी के लाभार्थियों में छोटे किसान, युवा, भूमिहीन श्रमिक, बच्चे तथा महिलाएं शामिल हैं। एचडीएफसी बैंक में हेड-कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, कु. नुसरत पठान ने कहा कि एचआरडीपी के द्वारा हम भारत के गांवों की संपूर्ण आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियां बेहतर बनाने के लिए एक ईकोसिस्टम का निर्माण कर रहे हैं। हमारे एनजीओ पार्टनर परियोजनाओं की योजना व क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

म्यूजिक स्कॉलरशिप के लिये आवेदन आमंत्रित

उदयपुर। हिन्दुस्तानी म्यूजिक (गायन-ख्यालध्रुपद, मैलोडी इंस्ट्रुमेंट्स-सितार, सरोद, वायलिन, फ्लूट, हॉर्मोनियम इत्यादि) में ऐडवांस्ड ट्रेनिंग के लिये छात्रवृत्ति हेतु 18 से 30 वर्ष तक की उम्र (1 मार्च 2018 तक) के विद्यार्थियों से आवेदन (म्यूजिक एजुकेशन में बायो-डेटा) आमंत्रित किये गये हैं। इस छात्रवृत्ति के अंतर्गत एक वर्ष अप्रैल 2018 से मार्च 2019 के लिये 7,500 रूपये प्रतिमाह प्रदान किये जायेंगे। आवेदन (बायो-डेटा) में आवेदन का नाम, जन्मतिथि, पता, सम्पर्क नंबर/वैकल्पिक सम्पर्क नंबर, पेशेवर योग्यता, ईमेल आइडी, म्यूजिक टीचर्स/गुरू, कुल प्रशिक्षण के वर्ष की संख्या के संबंध में विस्तृत विवरण और अन्य महत्वपूर्ण जानकारियों के अलावा उपलब्धियों/पुरस्कारों/स्कॉलरशिप एवं परफॉर्मेंस का विवरण मौजूद होना चाहिये। चुने गये प्रतिभागियों को ईमेल या टेलीफोन के जरिये सूचित किया जायेगा। उन्हें एनसीपीए, मुंबई में फरवरी 2018 में ऑडिशन के लिये प्रस्तुत होना होगा। सेलेक्शन कमिटी का निर्णय अंतिम होगा।

मोबाइल वैन्स से सिम अपग्रेड और आधार लिंक

उदयपुर। राजस्थान के ग्रामीणों के जीवन को आसान बनाने और उन्हें बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए वोडाफोन ने दो मोबाइल वैन्स तैनात की हैं, जो गांवों एवं छोटे नगरों में जाकर लोगों को सिम अपग्रेड और आधार वैरिफिकेशन की सुविधाएं मुहैया करा रही हैं।

वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि जनवरी में शुरू हुई ये मोबाइल वैन्स अब तक झुंझुनु, महापुरा, हिंगोनिया, भद्रा, फतेहपुर, बांदीकुई, मकराना, पंचपदरा, फलोदी सहित 450 से ज़्यादा गांवों में यह सुविधा उपलब्ध करा चुकी हैं और अब दूर-दराज के गांवों जैसे नचवा, कास्ली, ढोद, हिंडोंन, मनोहरपुर, किरधौली, सिंगरवत, कुरली, कुलासर, मंगलूना आदि में अपनी सेवाएं देंगी। वोडाफोन की मोबाइल वैन्स सुनिश्चित करेंगी कि 2जी-3जी के उपभोक्ता घर बैठे अपने सिम को 4जी में अपग्रेड कर वोडाफोन सुपरनेट 4जी की सेवाओं का लाभ उठा सकें। पिछले 10 महीनों के दौरान, हज़ारों उपभोक्ताओं को सिम को 4जी में अपग्रेड करने तथा आधार के साथ लिंक करने में मदद कर चुके हैं।

लक्स गोल्डन दिवाज़ बातें विद द बादशाह

उदयपुर। लोगों के दिलो पर राज करने वाले किंग खान बालीवुड की अग्रणी नायिका दीपिका पादुकोन से बातें विद द बादशाह में बतियाते दिखेंगे।

इन दोनों के बीच हुई कई बातों से हटकर बालीवुड की पादुकोन की स्पष्टवादिता के बारे में कुछ चीजें जानना उनके सबसे बडे प्रशंसकों के लिए ज्यादा आश्चर्यजनक नहीं होगा। जब उनसे यह पूछा गया कि अपनी भूमिकाओं का चयन करने के लिए उन्हें क्या आकर्षित करता है तो उन्होने बिना किसी झिझक के साफ साफ कह डाला कि मेरे कैरियर के समय में एक समय ऐसा भी था जब मैं यह महसूस करती थी कि यदि सामने कोई बडा बैनर है, उसके साथ किसी सुपरस्टार का नाम जुड़ा हुआ है, तो उस प्रोजेक्ट को करना समझदारी है लेकिन किंग खान द्वारा दी गई थोड़ी बहुत सलाह ने फिल्मों के लिए राजी होने के लिए दीपिका का तरीका ही बदल दिया।

बादशाह और क्वीन के बीच समानताओं ने दोनो को एक अनोखे बंधन में बांध दिया। और तो और किंग की सलाह पर काम करते हुए क्वीन भी बालीवुड पर राज करने लगी। जब आप इस सलाह के बारे में सुनेंगे तो निष्चित ही आश्चर्य करेंगे। अब दर्शक चेट शो लक्स गोल्डन दिवाज -बातें विद द बादशाह में बालीवुड पर राज करने वाली नायिकाओं से बादशाह खान को मजेदार अंदाज में बतियाते देखेंगे। यह सारी बातें लक्स गोल्डन रोज अवार्ड के अवसर पर हुई है।

साथ : 7 क्रिकेट महोत्सव को मिला जबरदस्त प्रतिसाद

उदयपुर। वंडर सीमेंट साथ : 7 क्रिकेट महोत्सव में खेलने वाली टीमों के लिए शुक्रवार को राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात में 298 स्थानों पर लक्की ड्रा का आयोजन किया गया। चौदह हजार से अधिक संख्या में प्राप्त आवेदन में से हर स्थान पर 16 टीमों का चयन किया गया।

मुख्य अतिथि यूआईटी चैयरमेन रवीन्द्र श्रीमाली थे। इस अवसर पर वंडर सीमेंट के एवीपी मार्केटिंग सिद्धार्थ सिंघवी, जीएम, कॉपरेट ब्रांडिंग एण्ड कम्युनिकेशन जाहिद अफरोज खान, मार्केटिंग जनरल मैनेजर दिनेश जोशी, साथ : 7 वार रूम हेड पंकज सींघल तथा मिडास नेक्सट के प्रबंध निदेशक दीपक पवॉर मौजूद थे।

राजस्थान की प्रत्येक तहसील में चयनित होने वाली 16 टीमों में दो टीमों का स्थान आरक्षित है जिसमें एक टीम तहसील पर गत वर्ष की विजेता टीम तथा दूसरी टीम तहसील स्तर पर चयनित राज मिस्त्री (कारीगर)/ठेकेदार (कॉन्ट्रेक्टर) की होगी। मध्य प्रदेश और गुजरात में एक तहसील स्तर पर चयनित राज मिस्त्री (कारीगर)/ठेकेदार (कॉन्ट्रेक्टर) की टीम का स्थान आरक्षित है।

तहसील से विजेता टीमें अपने जिला मुख्यालयों में खेलेंगी और जिले का प्रतिनिधित्व करने वाली टीम का चयन होगा। 51 जिला टीमें राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात के 8 जोन में टकराएंगी जिसमें 60 महिला टीम भी होगी। क्रिकेट महोत्सव का समापन आठ अंतिम टीमों के बीच 24 दिसंबर को उदयपुर में होगा। तहसील स्तर से फाइनल तक टूर्नामेंट में विजेता टीमों को कुल 40 लाख रुपये के इनाम दिए जायेंगे, जिसमें प्रतियोगिता जीतने वाली टीम को 3.5 लाख रुपये का इनाम दिया जाएगा।

एस्सार ने एजिस का 300 मिलियन डॉलर में कैपिटल स्क्वायर पार्टनर्स को विक्रय किया

उदयपुर। एस्सार ग्लोबल लि. (एस्सार ग्लोबल) के पूर्ण स्वामित्व वाली पोर्टफोलियो कम्पनी एजीसी होल्डिंग्स लि. (एजीसी) मॉरिशस ने एजिस, जो एक प्रमुख वैश्विक आउटसोर्सिंग कंपनी है, की नियंत्रक कंपनी एसएम होल्डिंग्स लि. मॉरीशस में अपनी 100 प्रतिशत हिस्सेदारी का कैपिटल स्क्वायर पार्टनर्स (सीएसपी) को 300 मिलियन डॉलर (लगभग 2000 करोड़ रुपए) में विक्रय किया है। इस विक्रय से मिलने वाली रकम की घोषणा 3 अप्रैल को की गई थी। इसका इस्तेमाल एस्सार के कर्जों के भुगतान में होगा। इस सौदे का पूरा होना एस्सार के अपने प्रभाव को परिसंपत्ति मुद्रीकरण कार्यक्रम द्वारा कम करने के उद्देश्य का हिस्सा है। एजिस व एस्सार ऑइल की बिक्री से मिली रकम के जरिए एस्सार लगभग 75000 करोड़ रुपए के कर्ज का भुगतान करने में सक्षम होगा। इस सौदे के बाद ग्राहकों को पेश की जाने वाली सेवाओं में मूलभूत वृद्धि व रणनैतिक अधिग्रहणों द्वारा विविधता लाने वाली एस्सार ग्लोबल की बीपीओ क्षेत्र से पूरी तरह से निकासी हो जायेगी।

वोडाफोन और माइक्रोमैक्स ने पेश किया कैशबैक ऑफर

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने माइक्रोमैक्स के साथ अपनी साझेदारी को विस्तारित किया है। इस एसोसिएशन के तहत वोडाफोन एंट्री लेवल के माइक्रोमैक्स 4जी स्मार्टफोन मॉडल्स की सम्पूर्ण रेंज पर आकर्षक कैशबैक ऑफर की पेशकश की गई है।

वोडाफोन इण्डिया में एसोसिएट डायरेक्टर- कन्ज़्यूमर बिज़नेस अवनीश खोसला ने कहा कि इस साझेदारी के तहत वोडाफोन के मौजूदा एवं नए उपभोक्ता माइक्रोमैक्स का कोई भी लोकप्रिय स्मार्टफोन (भारत 2 प्लस, भारत 3, भारत 4 और कैनवास-1 की खरीद पर आकर्षक कैशबैक ऑफर्स का लाभ उठा सकते हैं। ऑफर का लाभ उठाने के लिए उपभोक्ता को 36 महीने तक हर माह कम से कम रु 150 का रीचार्ज कराना होगा। रीचार्ज किसी भी राशि में किया जा सकता है ताकि महीने का कुल रीचार्ज रु 150 प्रति माह हो। 18 महीने के अंत में उपभोक्ता को 900 रूपये कैशबैक मिलेगा और अगले 18 महीने बाद रु 1,300 कैशबैक मिलेगा। इस तरह उपभोक्ता कुल रु 2,200 कैशबैक का लाभ उठा सकते हैं। कैशबैक उपभोक्ता के वोडाफोन एम-पैसा वॉलेट में आ जाएगा।

हाल ही में वोडाफोन और माइक्रोमैक्स ने मात्र 999 रूपये में भारत का सबसे कम कीमत का 4जी स्मार्टफोन लॉन्च किया था, जिसके साथ वोडाफोन सुपरनेट 4जी कनेक्शन भी दिया गया।

नड़ और नाड़ी की.....

(पृष्ठ दो का शेष)

मूंछकार करणा उतना ही पहुंचा हुआ नड़वादक रहा। नड़ बांसुरी की तरह का लगभग तीन फीट लंबा सुपारी की लकड़ी का बना फूंक वाद्य है जो पाकिस्तान में बड़ा लोकप्रिय है। इसे प्राय: बरोच मुसलमान बजाते हैं। इसे बजाने पर ललाट व गले की नशें तन जाती हैं। करणा ने बताया कि नड़ और शरीर की नाड़ी की सुरतां एक हो जाती है तब धुन निकलती है। कभी-कभी तो इसे बजाने में इतना लीन हो जाता हूं कि रातभर जागता रहता हूं। वैसे सुबह-शाम अपने भगवान को रिझाने के लिए तो इसे बजाता ही हूं।

नड़ पर करणा मुख्यत: तीन प्रकार की धुनें अधिक बजाता। एक गुर धुन होती है जो धीरे-धीरे चलती है। दूसरी लसी तथा तीसरी लहरां होती है परन्तु ज्यों-ज्यों रात ठहरती है त्यों-त्यों नड़ बड़ी मस्ती देती है। हिन्दुस्तान में करणा ही एकमात्र ऐसा कलाकार था जिसके मुकाबले में दूसरा कोई नड़ वादक नहीं हुआ। करणा जितना शक्तिशाली था उतना ही भक्ति से सराबोर रहा। यह भक्ति तो उसकी बचपन से ही थी। उसके भगवान युगल रूप में थे जो सदैव उसके सिर पर साफे में बिराजमान रहे। लोगबाग मंदिरों में भगवान के दर्शन को जाते हैं परन्तु करणा का मंदिर तो उसके माथे पर ही था। राधा-कृष्ण और शिव-पार्वती सदैव उसकी रक्षा करते। इस संबंध का उसने एक गीत सुनाया-

मन्दरियो चुणायो माथे रे मांई
जीके रे दुसमण करे कांई ?
अरज करे करणाराम सुणे मुजा सांई
मले जो दुसमण नहीं समझे तो
गोली ठोकां वांरे पेट रे मांई।

अर्थात्- अपने सिर पर मैंने मंदिर बनवाया। कोई दुश्मन मेरा क्या कर लेगा? करणाराम अर्ज करता है, यदि कोई दुश्मन मिल जाय और समझ नहीं सके तो उसके पेट में गोली ठोक दें।

करणा के सिर के साफे में राधा-कृष्ण के मस्तक पर सदा ही मयूरपंख सुशोभित रहा। उसने बताया कि इन युगल रूप भगवान ने कठिन समय में कई बार उसकी रक्षा की। एकबार जब वह डकैती डालने जा रहा था तब बीच रास्ते में ही उसका ऊंट लंगड़ा हो गया। इस पर करणा के साथियों ने उसे पीछे लौट जाने की राय दी पर करणा नहीं माना। उसने वहीं ऊंट रोका और अपने सिर के भगवान को जमीन पर प्रतिष्ठित कर उनके सामने अगरबत्ती जलाई और कहा कि मालिक ऊंट को ठीक कर देना नहीं तो इसे गोली मार कर देश छोड़ पाकिस्तान चला जाऊंगा। यह कहते ही उसने अगरबत्ती की राख ऊंट के लगाई और देखते-देखते ऊंट का लंगड़ापन जाता रहा।

सन् 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद जब सीमा की चौकसी बढ़ गई तब करणा ने अपराधिक कार्य छोड़ पिथोडाई गांव के पास पालजी की डेरी पर खुद की जमीन खरीद खेती करना शुरू कर दिया किन्तु 1975 में खेत को लेकर उसका झगड़ा अल्लाबख्श नामक व्यक्ति के साथ हो गया। इस झगड़े में इतनी तनातनी हुई कि करणा ने गोली मार उसकी हत्या कर दी जिससे करणा को जैसलमेर की जेल में भेज दिया गया। वहां करणा के खतरनाक दुर्दान्त साहस को देख पुलिस के भी हौसले उड़ गये। जेल में करणा ने अपने नाखून ही नहीं बढ़ाये अपितु उनके सहारे जेल की कोठरी को खुरच-खुरच कर भाग निकलने का रास्ता भी बना लिया। बाद में उसे वहां से जोधपुर के जेल भेज दिया गया। यहां आकर करणा शांत हो गया।

करणा ने पांच वर्ष जोधपुर की जेल में हवा खाई। उदयपुर आया तब वह परोल पर था। उसके आत्मसमर्पण की भी एक दिलचस्प घटना है। उसने बताया कि जब उसकी जमीन सिंधी मुसलमान के नाम करदी गई तो उससे रहा नहीं गया। उसका वीरापन चढ़ आया और खून खौल उठा। इस बीच उसका एक साथी गांववालों के साथ मिल गया और करणा के खिलाफ बगावत करने लगा। तब करणा अपने आपे से बाहर हो गया और उसने गोली दागकर उसका काम तमाम कर दिया। इस पर उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

करणा जाति से भील था। उसके छह लड़कों में हीरालाल नड़ व अलगोजा बजाता है। धन्नाराम मटकी वादक है। उसे यह भी मालूम था कि प्रताप के सैनिक भील ही थे जो तीर कमान से दुश्मनों का डटकर मुकाबला करने में सिद्ध थे।

आठ-दस वर्ष डाकूजीवन व्यतीत करने के बाद करणा बड़ा शांत व गंभीर बन गया। वह प्राय: मौन ही रहता। दयावान वह इतना हो गया कि चींटी मरती देखकर भी उसका दिल दहल उठता। उसने बताया कि उसके रोम-रोम में अकल भरी हुई है। विदेशी लोग निरंतर उसे घेरे रहते हैं। वह चाहता है कि किसी विदेशी महिला से उसकी शादी हो जाए ताकि लोगों के सवालों का उसकी ओर से वह उत्तर देती रहे और कोई उसका शोषण भी नहीं कर पाये। करणा को अंत तक लगता रहा कि दुश्मन उसके पीछे पड़े हुए हैं और उसने जिस तरह लोगों के सिर उड़ाये उसी तरह उसका सिर भी तलवार के बल उड़ा दिया जाएगा। यही हुआ।

मरु संस्कृति केंद्र जैसलमेर के संस्थापक नंदकिशोर शर्मा ने बताया कि करीब 60 वर्ष की उम्र में 2 जनवरी 1988 को करणा का निधन हुआ। उस पर जैसलमेर के ही डाकू उमा पुरी का प्रभाव रहा। उमा पुरी की बहादुरी के लोकगीत सुन उसने अपने मन में ठान ली कि वह भी आगे जाकर उमा पुरी जैसा ही डाकू बनेगा ताकि उसके नाम पर भी लोग लोकगीत गायें और वह भी अमर हो जाय। वह उसका दुर्भाग्य ही रहा कि उसके पीछे पड़े असामाजिक तत्वों ने तलवार की नोक पर उसका सिर उड़ा दिया किंतु ऊंट पर बैठा करणा सिर विहीन होते हुए भी अपने हाथ में उसकी नकेल पकड़े रहा और सीधा घर पहुंचा।

निगरानी उत्पादों की लॉचिंग

उदयपुर। जानी मानी कंपनी विडियोकोन वॉलकैम ने घर और प्रतिष्ठान की सुरक्षा चिंताओं और दैनिक रीयल टाइम मॉनिटरिंग को

आसान बनाते हुए शुक्रवार को राजस्थान के उदयपुर में अपने सीसीटीवी और सिक्योरिटी सिस्टम के विडियो सर्वुलेंस (निगरानी) उत्पादों की रेंज को लॉन्च किया है। साथ ही विडियोकोन की एक विशिष सीरिज भी लॉन्च की गई जिसमें छोटे व्यापारियों के लिए विशेष सुविधाएं हैं।

इन उत्पादों की लॉन्चिंग कंपनी के अपूर्वा गुजराथी और ओमसिंह भाटी ने की। इस दौरान राजस्थान के मास्टर डिस्ट्रीब्यूटर निकेत काबरा, उदयपुर डिस्ट्रीब्यूटर और ओरोन के विष्णु मेनारिया भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में अपूर्वा गुजराथी और ओमसिंह भाटी ने बताया कि विडियोकोन वॉलकैम के ये सिक्योरिटी उत्पाद लोगों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाएंगे। लोग अपने घर की स्मार्टफोन के जरिये लाइव स्ट्रिमिंग करते हुए घर की लाइव पिक्चर देख सकेंगे। कोई भी अवांछित हरकत होने पर फोन पर तुरंत नोटिफिकेशन्स आ जाएगा। डिवाइस के डेटा पासवर्ड से सुरक्षित रहते हैं। इसके चोरी हो जाने पर तुरंत उपभोक्ता को चेतावनी संदेश भेज दिया जाता है।

उन्होंने बताया कि विडियोकोन वॉलकैम ने मुख्य रूप से घरेलू और छोटे वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों जैसे दुकानें, कार्यालय के लिए हार्ड एंड काफी परिष्कृत उत्पादों को प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही इस रेंज में इंटरप्राइजक्व, कॉर्पोरेट और सरकारी सेगमेंट के लिए भी विभिन्न परियोजनाओं में उपयोग के लिए आसान प्लग और प्ले समाधान शामिल किये हैं।

संयम कीर्ति स्तम्भ का लोकार्पण

उदयपुर। मुनि प्रमाणसागर महाराज और मुनि विराटसागर के सान्निध्य में सोमवार को देबारी स्थित

पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर परिसर में 11 फिट ऊंचे संयम कीर्ति स्तम्भ का लोकार्पण झमकलाल टाया एवं नेमीचंद पटवारी परिवार द्वारा किया गया। समारोह के पश्चात स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर धर्म प्रभावना समिति के अध्यक्ष कुन्थुकुमार जैन, चातुर्मास प्रमुख महेंद्र टाया, प्रचार संयोजक शान्तिकुमार कासलीवाल, जिनेन्द्र गांगावत सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

मूत्रमार्ग से 12 सेंन्टीमीटर का स्टोन निकाला

उदयपुर। पेसिफिक मेडीकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल के सर्जन डॉ. के. सी. व्यास, डॉ. गौरव वधावन,

यूरोलॉजी विभाग के यूरोलॉजिस्ट एवं रिकन्स्ट्रक्शनल सर्जन डॉ. हनुवन्तसिंह राठौड़, ऐनेस्थेटिक डॉ. प्रकाश औदित्य, डॉ. ज्योति की टीम ने 32 वर्षीय मुजफ्फर हुसैन का सफल ऑपरेशन कर पेशाब के रास्ते से 12 सेन्टीमीटर का स्टोन निकालकर चौदह साल से हो रहीं परेशानी से छुटकारा दिलाया।

उदयपुर का मुजफ्फर हुसैन पिछले चौदह साल से पेशाब रूकने की शिकायत से परेशान था। इसके चलते अण्डकोश के नीचे भारीपन के अनुभव के साथ दर्द की शिकायत बनी रहती थी। परिजनों ने मुजफ्फर को कई जगह दिखाया लेकिन आपॅरेशन के डर से लम्बे समय तक इलाज नहीं कराया।

गत दिनों परिजनों ने पेसिफिक मेडीकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल के यूरोलॉजिस्ट एवं रिकन्स्ट्रक्शनल सर्जन डॉ. हनुवन्तसिंह राठौड़ को दिखाया। जब उसकी सोनोग्राफी और सीटी स्कैन कराई तो उसके मूत्रमार्ग से पहले एक बडा स्टोन नजर आया जिसका ऑपरेशन द्वारा ही इलाज सम्भव था। साढे तीन घण्टे तक चले इस सफल ऑपरेशन में 12 सेन्टीमीटर की एक बड़ी निकाली गई।

यह ऑपरेशन पेरेनियल ऐप्रोच की विधि से युरीनरी डायवर्टीकूलम एवं उसमें फॅसे यूरीनरी स्टोन को सफलतापूर्वक निकाल कर पेशाब की नली का पुर्ननिर्माण किया गयह चिकित्सा के क्षेत्र में यह प्रथम केस है। मुजफ्फर पूरी तरह स्वस्थ्य है। ऑपरेशन को सर्जन डॉ. के. सी.व्यास, डॉ. गौरव वधावन, डॉ. हनुवन्तसिंह राठौड़, डॉ. प्रकाश औदित्य,चन्द्रमोहन शर्मा, अजय चौधरी एवं अनिल भट्ट की टीम ने अंजाम दिया।

दो दिन के नवजात का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने दो दिन के नवजात का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों दो दिन के नवजात शिशु को सांस की तकलीफ के चलते पीआईएमएस में लाया गया।

डॉ. विवेक पाराशर ने जांच की तो पता चला कि बच्चे को कन्जेवाइटल डॉयफ्रामेटिक हर्निया नामक बीमारी है जिससे बच्चे की छोटी आंत, बड़ी आंत व तिल्ली डायफ्राम में छाती में आ गई। इस पर नवजात को तुरंत वेंटीलेटर पर रखकर उसकी हालत को स्थिर किया गया।

शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रवीण झंवर ने नवजात का जटिल ऑपरेशन द्वारा छाती से आंतों व तिल्ली को निकालकर डायफ्राम रिपेयर किया। नवजात अब पूर्णत: स्वस्थ है और उसे हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया है।

रैंप पर दिखी राजस्थानी संस्कृति की जीवंतता

'आपकी खूबसूरती उनकी नजर से' प्रतियोगिता में उदयपुर में बाजी मारी

- डॉ. तुक्तक भानावत -

उदयपुर। आरएसपीएल लि. के एक क्वालिटी प्रोडक्ट वीनस क्रीम बार द्वारा आयोजित 'आपकी खूबसूरती उनकी नजर से' प्रतियोगिता में शमी शेख एवं पूजा स्याल शेख को उदयपुर संस्करण का विजेता जोड़ा घोषित किया गया। ग्रैंड फिनाले के निर्णायक शेरोन अलेक्जेंडर (मॉडल) प्रियंका सिंह (मि. इंडिया वर्ल्ड, फाइनलिस्ट 2016) और अगेन्द्र गौतम (कोरियोग्राफर) थे।

उदयपुर इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता का सातवां स्थान था। प्रतियोगिता 22 नवम्बर से शुरू होकर चुनिंदा प्रतिभागियों के लिए तीन दिनों तक चली।

फेस टु फेस सौन्दर्य सत्र के ऑडिशन हुए और समापन होटल गोल्डन ट्यूलीप, उदयपुर में हुआ जहां शमी शेख एवं पूजा स्याल शेख को विजेता चुना गया।

आरएसपीएल लि. के जनरल मैनेजर मोहितराज सिंह ने कहा कि युगलों के वैवाहिक बंधनों को मजबूती प्रदान करना, पोषित करना और संजोने के अनुभव को प्रोत्साहित करना इस प्रतियोगिता का प्रमुख महत्वपूर्ण लक्ष्य है। हम प्रतिक्रियाओं और भावनाओं की संख्या को देखकर प्रसन्नचित्त हैं। प्रतियोगिता के सितम्बर से शुरू होकर 6 से अधिक महीनों तक चलने की योजना है। अगला शहर देहरादून है।

उसके बाद इंदौर, जबलपुर, रायपुर, आगरा, लखनऊ और अन्त में वाराणसी में समाप्त होगी। समापन में प्रतिभागियों को रैम्प पर चलने से लेकर गेम खेलने तक की विभिन्न गतिविधियों में शामिल किया गया। इससे पैनल को उनकी केमेस्ट्री को विश्लेषित करने में मदद मिली। प्रत्येक शहर का यही प्रारूप होगा जो अगले वर्ष के प्रारम्भ में मुख्य ग्रैंड फाइनल की पराकाष्ठा का रूप लेगा।

मॉडलिंग को करियर बनाना चाहती हूं-प्रियंकासिंह

कॉलेज के समय से मन में मॉडलिंग के प्रति जज्बा जागा। अब इसी के सहारे आगे बढ़ने का लक्ष्य है। हालांकि सोनी टीवी के प्रबंधकों ने छोटे पर्दे से जुड़ने की बात कही है, लेकिन एक बार फिर से मिस इंडिया वर्ल्ड के पायदान पर पहुंचने की ख्वाहिश है। यह बात मि. इंडिया वर्ल्ड, फाइनलिस्ट 2016 रह चुकी प्रियंकासिंह ने मीडिया से बातचीत के दौरान कही। वे वीनस क्रीम बार 'आपकी खूबसूरती उनकी नजर से' कार्यक्रम में बतौर निर्णायक शामिल हुई। उत्तरप्रदेश के लखनऊ शहर में जन्मी प्रियंकासिंह ने कहा कि जब वह द्वितीय वर्ष में थी तब ही कॉलेज में आयोजित समारोह में पहली बार रैंप पर केटवॉक किया और माडलिंग की। इसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि फिलहाल तो उनका पूरा ध्यान एक बार फिर मिस इंडिया बनने की ओर है। इसके बाद मिस वर्ल्ड की तैयारी में जुटेगी। कोई भी सौन्दर्य प्रतियोगिता के बाद युवतियों का लक्ष्य फिल्मों की तरफ रहता है, लेकिन उनका ऐसा कोई इरादा नहीं है। वह मॉडलिंग को ही अपना करियर बनाना चाहती है।

मांड गायिका मांगीबाई का निधन

राजस्थान की सुप्रसिद्ध मांडगायिका मांगीबाई आर्य का गुरुवार 23 नवम्बर को सुबह ह्रदयघात से निधन हो गया। वे 88 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे चार पुत्र गिरधारी, मदन, माणिक व ओमप्रकाश सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गईं हैं।

प्रतापगढ़ के कमलारामजी एवं मोहनबाई के यहां जन्मी मांगीबाई आर्य को गायकी विरासत में मिली। उनके पिताजी शास्त्रीय संगीत के मशहूर कलाकार थे। लोक संगीत की मशहूर विधा मांड गायकी को देश-विदेश तक पहुंचाने में श्रीमती आर्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में राजस्थानी लोक गीतों की अपने मधुर स्वर से अनूठी पहचान दी।

उदयपुर में किसी भी विशेष अतिथि के आगमन पर 'केसरिया बालम आवो नी पधारो म्हारे देश' के सुमधुर कंठ से बरबस ही सभी को आकर्षित करने वाली श्रीमती आर्य को आकाशवाणी महानिदेशालय भारत सरकार ने 'ए' गेड कलाकार का दर्जा प्रदान किया।

मांगीबाई को 1982 में महाराणा कुंभा संगीत परिषद पुरस्कार, 1984 में मुम्बई के सिद्धार्थ मेमोरियल ट्रस्ट, 1987 में बीएन नोबल्स महाविद्यालय प्रबंध समिति, 1994 में तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत के हाथों राज्य स्तर पर, 2003 में मरूधरा संस्था कोलकाता, 2006 में राजस्थानी भाषा सहित्य अकादमी बीकानेर, 2007 में राज्यपाल के हाथों राज्य स्तरीय पुरस्कार, 2008 में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर, 2008 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील द्वारा केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 2010 में मध्यप्रदेश सरकार तथा 2011 में राजस्थान रत्नाकर (नई दिल्ली) सहित हिन्दुस्तान जिंक, जे.के सिन्थेटिक्स, डीसीएम, भारतेंदु साहित्य समिति, छत्रपति शिवाजी महोत्सव, महाभारत व कुरूक्षेत्र आदि उत्सवों के मौके पर भी सम्मान मिले।

कई सीरियल व एलबम में भी उनकी आवाज बुलंद हुई। बीस वर्ष तक उन्होंने पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर को लोकगायन शिक्षिका के बतौर सेवाएं दी।

राजस्थानी नेगचार, रीतिरिवाज, विविध संस्कार तथा अन्य कई अवसरों पर गाये जाने वाले सैकड़ों गीत उन्हें कंठस्थ थे। भारतीय लोककला मंडल, संगीत नाटक अकादमी आदि संस्थानों ने उनके अनेक गीत टेपबद्ध किये। उन्होंने कई महिला संगठनों तथा प्रशिक्षण आयोजन में अनेक महिलाओं एवं युवक-युवतियों को प्रशिक्षित किया। लोकगीतों के विविध संकलनों में भी मांगीबाई का योगदान स्मरणीय रहेगा।

स्पेन में छाए उदयपुर के कथक कलाकार

उदयपुर। ऑल इंडिया कल्चरल सेन्टर एवं अखिल भारतीय शास्त्रीय संघ पुणे एवं युनेस्को की ओर से स्पेन के वेलाडोलिड में आयोजित 7वीं कल्चरल ऑलम्पियाड ऑफ परफार्मिम आर्ट, ग्लोबल काउन्सिल आर्ट एण्ड कल्चरल प्रतियोगिता में उदयपुर के कथक आश्रम के बाल कलाकारों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है। प्रतियोगिता में दुनियाभर के 250 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया

निदेशिका चन्द्रकला चौधरी ने बताया कि कथक में श्रेया मेहता प्रथम, फॉक में अरूणिमा सुराणा प्रथम, कथक में महक पटेल तृतीय, किमाया सोमानी मेडीटोरियस अवार्ड, हिमोनिश शर्मा द्वितीय, उप कथक में प्रियंका बरूआ एवं हिमांद्री मुलचंदानी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर चन्द्रकला चौधरी को भी वेलाडोलिड स्पेन के मेयर द्वारा सम्मानित किया गया।

डिजिटल इंडिया पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार

उदयपुर। भारत जैसे विकास व कृषि प्रधान देश में आज का आधुनिक किसान भी क्रेडिट कार्ड व डीजिटल पेमेंट की ओर अग्रसर हो रहा है जिससे उसके समय की बचत हो रही है। ये विचार जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक कम्प्यूटर साईंस एण्ड आईटी विभाग की ओर से 'डिजिटल इंडिया एवं केशलेस के प्रभावी क्रियान्वयन' पर आयोजित दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार के समापन सत्र में मुख्य अतिथि एमपीयूट के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने व्यक्त किये।

अध्यक्षता करते हुए रजिस्ट्रार प्रो. सी.पी. अग्रवाल ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के दौर में विभिन्न चीजों में डिजिटाईजेशन की प्रक्रिया में व्यापक तेजी आई है। बैंकिग सेक्टर हो या परिवहन भुगतान की प्रक्रिया या पत्र व्यवहार की हमारी रोजमर्रा से जुड़ी कितनी चीजें ऑनलाईन हो चुकी हैं।

इन्हे अब गिनना मुश्किल है। आज चारों ओर डिजिटाईजेशन अपनी छाप छोड़ चुका है। डिजिटल पेमेंट में पारदर्शिता लाने के लिए पांच मौड हैं जिनसे आप डिजिटल पैमेंट व ट्रांजेक्शन कर सकते हैं।

विशिष्ठ अतिथि कोटा ओपन विश्वविद्यालय की निदेशक डॉ. रश्मि बोहरा ने कहा कि भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया प्रोजेक्ट की शुरूआत का मकसद देश को नॉलेज इकॉनोमी में बदलना है। अनेक सेक्टर में लोगों को सुविधाए दी जिनमें डिजिटल लॉकर, डिजिटल लाईफ सर्टीफिकेट, ट्विटन संवाद, मनरेगा, डिजास्टर वार्निंग सिस्टम, ऑन लाईन रिर्टन, ईमनी, प्रगति, ऑन लाईन पेन कार्ड शामिल है। ऐसे अनेक क्षेत्र है जिनमें डिजिटाईजेशन से काम आसान हो गया है। विशिष्ठ अतिथि पंजाब विश्वविद्यालय के डॉ. विशाल गोयल, जनशिक्षण की निदेशक डॉ. मंजू मांडोत, डॉ. भारत सिंह देवड़ा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. भूषण सोनी ने किया जबकि धन्यवाद डॉ. भारत सिंह देवड़ा ने ज्ञापित किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।